चैतन्य लहरी

खंड : ११ अंक ९ व १०

१९९९

आपको कुछ नहीं करना पड़ता। आपके सामने समस्याएं आती हैं, तो इससे पहले कि वे आपको छू सकें परम चैतन्य इनका समाधान कर देता है। परन्तु आपको स्वयं पर और परम चैतन्य पर पूर्ण विश्वास करना होगा और विश्वास होना होगा कि आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

इस अंक में

सम्पादकीय	1
ध्यान धारना किस प्रकार करें	3
सहस्त्रार पूजा - 9.5.1999, कवैला	8
श्री फातिमा बी पूजा- 14.8.88, सेन्टजार्जण्वेस	18
सार्वजनिक कार्यक्रम, मुम्बई 1998	32

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : वी जे नालगिरकर
१६२, मुनीरका विहार
नई दिल्ली-११००६७

सम्पादकीय

स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा सभी धर्मों का अन्तिम लक्ष्य रहा है। सभी धर्म कहते हैं, "जैसा करोगे, वैसा भरोगे" (As you sow, so shall you reap)। श्री कृष्ण के कर्म फल के सिद्धान्त का यही आधार है। बाइबल में भी इस विषय पर ऐसे बहुत से उदाहरण खोजे जा सकते हैं। बौद्ध तथा जैन धर्म का निर्वाण, मोक्ष का सिद्धान्त और जैन का सतोरी (satori) भी इसी स्वर्गीय अवस्था का वर्णन है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् नई चेतना की स्थिति में हमारी परम पावनी श्री माताजी के चरणकमलों में गणपति पुले में इस स्वर्गीय अवस्था का अनुभव हमने किया है। पैगम्बर मोहम्मद ने ठीक ही कहा था कि "स्वर्ग तो माँ के चरणों में है।" चेतना के स्वर्गीय अनुभव की ये मोहर हमें इस स्वर्गीय अवस्था को बार बार खोजने को विवश करती है। दूसरे शब्दों में अपनी परमेष्वरी माँ के चरण कमलों में निरन्तर ब्रह्माण्डीय सहज परिवार का मिलन बनाए रखने की शुद्ध इच्छा हममें उभरती है।

गणपति पुले स्वर्ग का प्रतीक बन गया है। कवैला दूसरा गणपति पुले कहलाता है। श्री आदिशक्ति पूजा के अवसर पर अमेरिका के सहजयोगियों ने कन्ना-जोहारी, अपस्टेट न्यूयार्क (Cana Johari, Up State, New York) की पावन भूमि पर गणपति पुले की सुगन्ध को चखा। दुबई के योगी गण महासागर के दूसरे छोर पर एक अन्य गणपति पुले की सृष्टि करने के गीत लिख रहे हैं। स्नेहमयी माँ के साथ बिताए गए आनन्दमय क्षण हमें स्वर्ग की अनुभूति प्रदान करते हैं। उनके प्रेम में इतनी शक्ति है। अपने प्रेम की शक्ति उन्होंने हमें भी प्रदान की है। श्री माताजी द्वारा दिए गए प्रेम के उपहार को यदि हम दूसरे लोगों से बाँटे तो क्या उन पर भी वैसा ही प्रभाव न होगा ? क्या यह प्रेम अन्य लोगों को गणपति पुले के आनन्द से आत्म विभोर नहीं कर देगा। क्या यह पूरी सामूहिकता को स्वर्ग की अनुभूति नहीं देगा? परमेश्वरी माँ ने जब हमें ये शक्ति प्रदान की है तो क्यों न हम इसका उपयोग करें। क्यों हम अपना समय दूसरों की आलोचना आदि आनन्द विहीन, व्यर्थ के कार्यों में बर्बाद करें। यदि हम इस शक्ति को इस उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं करते हैं जिसके लिए ये हमें दी गई है तो हम इस शक्ति को खो देंगे तथा परमेश्वरी प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से अपना सम्बन्ध भी खो देंगे। सहजयोगी जब कहीं एकत्र होते हैं तो उनमें परमेश्वरी प्रेम की इस सर्वव्यापी शक्ति से जुड़ने की सामूहिक शक्ति होती है और वे स्वर्ग को पृथ्वी पर उतार लेते हैं।

उमर ख़य्याम जैसे कवियों ने स्वर्ग की तस्वीर को रोमांचक बनाकर पेश किया है, "स्वर्ग में परियां नृत्य कर रही होंगी।" अभी तक स्वर्ग का वर्णन मानवीय कल्पना पर आधारित था। सहजयोग की कृपा से हम सत्य को देखने में सक्षम हैं और अब हम जानते हैं कि **स्वर्ग एक स्थिति है जिसका अनुभव सहस्रार पर किया जा सकता है।** हमारी परमेश्वरी माँ ने हमें सिखाया है कि किस प्रकार इस स्थिति में प्रवेश करें। उस स्थिति में जब हम स्थापित हो जाते हैं तो शाश्वत आनन्द से परिपूर्ण होकर अपनी परमेश्वरी माँ के प्रेम की सुखद उष्णता का आनन्द लेते हैं। पर्वतों, नदियों, समुद्रों, जंगलों और फूलों की तरह से हम साक्षी भाव से अपने सृष्टा को देखते हैं और उनकी (श्री माता जी की) सृजन लीला का आनन्द लेते हैं। पृथ्वी पर स्वर्ग प्राप्त कर लेने के पश्चात् इससे अधिक हम क्या माँग सकते हैं। अब हमारी ज्ञानेन्द्रियां स्वर्ग-बोध करने के लिए प्रकाशमय हो उठी हैं। हमारे हाथ स्वर्गीय चैतन्य लहरियों के साक्षी हैं। हमारे चक्षु इसके सौन्दर्य के प्रति जागरूक हैं, हमारे कर्ण इस स्वर्गीय संगीत को सुनने के लिए खुल गए हैं। तो आइए अपनी जिह्वा से परमेश्वरी माँ का महिमा गान करें और स्वर्ग की तरह से ही पृथ्वी पर उनके साम्राज्य में आनन्द विभोर हो जाएं।

'जय श्री माता जी'

ध्यान धारना किस प्रकार करें

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी (19.1.84)

प्रातः काल उठें, स्नान करके बैठ जाएं। चाय यदि लेना चाहें तो ले लें; बातें न करें। प्रातः काल बिल्कुल बातें न करें, बैठ जाएं और ध्यान करें। इस समय दैवी किरणें आती हैं, और उसके पश्चात् सूर्योदय होता है। पक्षी भी इसी प्रकार जागते हैं और पुष्प भी। सभी इन दिव्य किरणों से जागते हैं। आप भी यदि संवेदनशील हैं तो आप महसूस करेंगे कि सुबह उठने से आप अपनी आयु से दस वर्ष छोटे लगेंगे। प्रातः काल जागना इतनी अच्छी चीज़ है, और फिर स्वतः ही रात को आप जल्दी सो जाएंगे। यह जागने के विषय में है, सोने के विषय में बताने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि सो तो आप जाएंगे ही।

प्रातः काल आप केवल ध्यान करें। ध्यान में अपने विचार शांत करने का प्रयत्न करें। आँखें खोलकर मेरी फोटो को देखें और निश्चित रूप से अपने विचारों को शांत कर लें। **विचारों को शान्त करने के पश्चात् ध्यान में जाएं। विचारों को शान्त करने के लिए 'येशू प्रार्थना' (Lord's Prayer) बहुत सहज चीज़ है क्योंकि विचारों की स्थिति आज्ञा स्थिति (Agnya State) होती है। अतः प्रातः काल येशु प्रार्थना या श्री गणेश का मन्त्र लेना याद रखें।** दोनों एक ही बात है। आप ये भी कह सकते हैं कि, **'मैंने क्षमा किया।'** यह कार्य करता है और आप निर्विचार समाधि में चले जाते हैं। अब आप ध्यान करें। इस अवस्था से पहले ध्यान नहीं होता। 'जब विचार आ रहें हों या 'मुझे चाय पीनी है' या 'मैं क्या करूं' 'अब मुझे कौन सा कार्य करना है?' 'ये कौन है' और 'वह कौन है' यह सब आएगा।

अतः सर्वप्रथम आप निर्विचार चेतना में चले जाएं, तभी आध्यात्मिक उत्थान आरम्भ होता है। निर्विचारिता की अवस्था प्राप्त करने के पश्चात्, इससे पहले नहीं। आपको यह जान लेना चाहिए। तार्किकता के स्तर पर आप सहजयोग में उन्नत नहीं हो सकते। अतः निर्विचार अवस्था में स्थापित होना पहली आवश्यकता है। अभी भी आपको महसूस होगा कि किसी चक्र विशेष में रुकावट बनी हुई है। इसे भूल जाएं। भुला दीजिए इसे।

अब आप समर्पण आरम्भ करें। कोई चक्र यदि पकड़ रहा है तो आपको कहना चाहिएः-

"श्री माताजी मैं आपके प्रति समर्पित हूँ।" अन्य विधियाँ अपनाने के स्थान पर आप केवल इतना कह दीजिए। परन्तु यह समर्पण तर्कयुक्त (Rationalised) नहीं होना चाहिए। तर्कयुक्ति से अब भी यदि आप ये सोचते हैं कि "मुझे ऐसा क्यों कहना चाहिए" तो कहने

का कोई लाभ न होगा। आपके हृदय में यदि पवित्रता और पवित्र प्रेम है तो यही सर्वोत्तम है। पावन प्रेम ही समर्पण है अपनी सभी चिन्ताएं अपनी माँ (श्री माताजी) पर छोड़ दें। सभी कुछ उन पर छोड़ दें। परन्तु अहम् चालित (Ego-oriented) समाजों में समर्पण करना बहुत कठिन कार्य है। इसके विषय में बात करते हुए भी मुझे घबराहट होती है। **फिर भी यदि आपको कोई विचार आ रहें हैं या आपका कोई चक्र पकड़ रहा है तो बस समर्पण कर दें। आप देखेंगे कि आपका चक्र साफ हो गया है। प्रातः काल आप इधर-उधर न होते रहें। अपने हाथों को भी बहुत अधिक न हिलाएं। आप देखेंगे कि ध्यान से ही आपके अधिकतर चक्र साफ हो गए हैं।**

अपने हृदय को प्रेम से भरने का प्रयत्न करें। हृदय में इसका प्रयत्न करें और हृदय की गहराइयों में अपने गुरू को विराजमान करने की कोशिश करें। जब गुरू आपके हृदय में विराजमान हो जाएं तो पूर्ण श्रद्धा और समर्पण से उन्हें प्रणाम करें। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् जो कुछ भी आप अपने मस्तिष्क से करते हैं वह मात्र कल्पना नहीं है क्योंकि आपका मस्तिष्क, आपकी कल्पना सभी कुछ ज्योतिर्मय हो चुका है। **अतः स्वयं को इस प्रकार बना लें कि अपने गुरू, अपनी माँ के श्री चरणों में नममस्तक हो जाएं। अब ध्यान धारणा के लिए आवश्यक स्वभाव की याचना करें। ध्यान धारणा तभी होती है जब आपकी एकाकारिता परमात्मा से हो।**

ध्यान धारणा में आने वाली समस्याएं

ध्यान करते हुए यदि आपको विचार आ रहे हैं तो सर्वप्रथम मन्त्र लें और फिर अपने अन्दर दृष्टि डालें। अवश्य श्री गणेश का मन्त्र लें, इससे बहुत से लोगों को सहायता मिलेगी। तब आप अपने अन्दर झांके और स्वयं देखें कि सबसे बड़ी बाधा क्या है। **सर्वप्रथम विचारों का आना** –विचारों को रोकने के लिए आपको 'निर्विचारा' का मन्त्र लेना होगा:

'ओऽम त्वमेव साक्षात् श्री निर्विचार साक्षात्, श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।'

अब अहम् की बाधा को लें। निसन्देह अब आपके विचार शान्त हो गए हैं परन्तु आपके सिर पर दबाव अभी भी बना हुआ है। यदि अहम् की बाधा बनी हुई है तो महत्त अहंकार का मन्त्र लें :

"ओऽम त्वमेव साक्षात् श्री महत्त अहंकार साक्षात्, श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यौ नमो नमः"

महत्त अर्थात् बड़ा, और अहंकार अर्थात् घमण्ड। इस मन्त्र को आप तीन बार कहें। अब भी यदि अहम् की बाधा बनी हुई है तो आपको अपनी बाई ओर उठानी होगी और दाईं ओर को नीचे लाना होगा। बायाँ हाथ फोटोग्राफ की तरफ करके दाएं हाथ से अपनी बाईं ओर को उठाएं और दाईं और में नीचे गिराएं ताकि अहम् और प्रति अहम् में सन्तुलन आ जाए।

ऐसा सात बार करें। अपने अन्दर देखने का प्रयत्न करें कि आपको कैसा लग रहा है।

एक बार जब आप सन्तुलन प्राप्त करलें तो भावनाओं पर, मनस शक्ति पर चित्त डालना सर्वोत्तम होगा। चित्त से अपनी भावनाओं, मनस शक्ति को देखें। अपनी माँ (श्री माताजी) के विषय में सोचने से आप अपनी भावनाओं को प्रकाशमय कर सकते हैं। ठीक है? भावनाओं को प्रकाशरंजित कर लें। इससे सभी समस्यांओं का समाधान हो जाएगा– मन की सभी समस्याओं का। एक बार जब आप उन भावनाओं से जुड़ जाएंगे और ध्यान में उन्हें देखना आरम्भ कर देंगे तो आप पाएंगे कि आपके अन्दर ये भावनाएं बढ़ने लगी हैं। यदि आप इन भावनाओं को अपनी माँ को समर्पित करने का प्रयत्न करेंगे, (या जैसे कहते हैं, इन्हें अपनी माँ के चरण कमलों में डाल देंगे) तो ये भावनाएं विलीन होने लगेंगी, एक प्रकार से फैल जाएंगी। ये विस्तार, आप जानते हैं, आप इस प्रकार करते हैं कि आपको लगता है कि ये आपके वश में हैं। भावनाओं को वश में कर लेने से आपकी भावनाएं विस्तृत, प्रकाशमय और सशक्त होती हैं।

अब आपको अपना श्वास देखना होगा। श्वास को कम करने का प्रयत्न करें, इसे कम करें, जैसे एक बार आपने श्वास लिया है तो कुछ क्षण रूकें, फिर श्वास लें। कुछ देर श्वास को अन्दर रोकें, तब श्वास छोड़ें। इस प्रकार एक मिनट में आपकी श्वासगति सामान्य हो जाएगी। ठीक है। ऐसा करने का प्रयास करें, चित्त को भावनाओं पर रखें। अच्छा! कुण्डलिनी को उठते हुए देखें (महसूस करें)। श्वास लेते हुए आपको लगेगा कि एक श्वास और दूसरे श्वास के बीच में रिक्त स्थान है। श्वास लें, इसे अन्दर रोकें। अब श्वास छोड़ें और कुछ क्षण तक श्वास को निष्कासित करते रहें। फिर से श्वास लें। अब इस प्रकार श्वास लेना आरम्भ करें कि वास्तव में श्वास प्रक्रिया कम हो जाए। परन्तु इसके लिए किसी प्रकार की जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए। आपका चित्त आपके हृदय पर या भावनाओं पर होना चाहिए। श्वास को कुछ देर अन्दर रोकना अच्छा होगा। श्वास रोकें, छोड़ें इसे थामें रहें। कुछ क्षण श्वास को बाहर ही रहने दें। आपको लगेगा कि कुछ देर के लिए आपने श्वास लिया ही नहीं। अब आपको लगेगा आप शान्त हो गए हैं।

आपके प्राण और मन के बीच 'लय' स्थापित होती है। दोनों शक्तियाँ एक हो जाती हैं।

सहस्रार पर तीन बार मन्त्र कहना चाहिए। "ओऽम त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात् श्री सहस्रार स्वामिनी मोक्ष प्रदायिनी माताजी, श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।"

आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होते ही कुछ लोगों को उस अगाध प्रेम की चेतना अनुभव होने लगती है। परन्तु कुछ लोगों में अभी तक अहम् शेष होता है जिसका समाप्त होना आवश्यक है। इसके लिए वो मेरे पास आते हैं। मैं देखती हूँ कि बुलबुलों की तरह से वे हवा में होते हैं। मानो पोषणकर्ता माँ ने इन्हें उड़ाया हो –

समुद्र की सतह पर उड़ते हुए बुलबुलों की तरह से। बहुत से लोग प्रति-अहं के कारण भी परेशान होते हैं। वे हर समय अपनी व्यक्तिगत परेशानियों के बारे में ही रोते रहते हैं। परन्तु एक बार जब उत्थान होता है तो उनकी एकाकारिता सागर की आत्मा से हो जाती है तब वे सागर की गहन, आनन्ददायी शक्ति का अनुभव करते हैं जो हर क्षण उनका पोषण, पथ प्रदर्शन और उत्थान करती है। सागर की सुन्दर गहराइयों में पैठ कर दिव्य अनुभवों के सुन्दर मोती वे प्राप्त करते हैं और जब उन्हें ये मोती प्राप्त हो जाते हैं तो कविताओं, नृत्यों, मुस्कानों, हँसी तथा आनन्द के रूप में वे ये मोती भेंट करने के लिए मेरे पास ले आते हैं। ये सब आपके अन्दर हैं परन्तु आपकी चेतना से दूर पड़े हुए हैं। यद्यपि आत्म साक्षात्कार से आपकी चेतना ज्योतिर्मय हो गई है परन्तु अभी तक आनन्द से यह प्रकाशित नहीं हुई है। शनैः शनैः यह आप में घटित होता है और, जैसा मैंने आपको बताया, जितना शीघ्र हो सके, आपमें यह घटित होना चाहिए।

समर्पण के लिए क्या है– यह शक्ति तो आपकी ओर स्वयं बह रही है और आपका पोषण कर रही है।

क्या हम कभी कहते हैं कि कमल अपनी सुगन्ध के सम्मुख समर्पित है?

क्या हम कभी कहते हैं कि सूर्य अपने प्रकाश के सम्मुख समर्पित है?

क्या हम कभी कहते हैं कि चाँद अपनी शीतलता के सम्मुख समर्पित है?

ऐसा कहना असंगत है। **सहजयोग के संदर्भ में शब्द 'समर्पण' का अर्थ केवल हमारे अहं, हमारी सीमाओं, हमारे उथलेपन का समर्पण हो सकता हैं। इन्हें हम अपना मान चुके हैं। महान और शाश्वत उपलब्धि के बदले हमने निरर्थक का समर्पण किया है। अज्ञान का ये बोझ छँट जाना चाहिए।**

मैं नहीं सोचती कि मैं कुछ करती हूँ, क्योंकि वास्तव में मैं कुछ नहीं कर रही। कभी–कभी तो मुझे लगता है कि इस प्रशंसा पर मेरा कोई अधिकार नहीं क्योंकि मैं तो वही हूँ जो मेरा स्वभाव है। मैंने कुछ प्राप्त नहीं किया–अपने स्वभाव के साथ मैं विद्यमान हूँ क्योंकि इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं कर सकती। जबकि आप लोगों ने उपलब्धि पाई है। आप लोगों को यह महान श्रेय जाता है कि स्वयं को देखने के लिए अपना आनन्ददायी सत्यस्वरूप देखने के लिए आपने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया है। वास्तव में मुझे आपकी प्रशंसा में कविताएं लिखनी चाहिएं। अपने तरीकों से यह दर्शाने का मैं भरसक प्रयत्न करती हूँ कि परमात्मा कितने प्रसन्न हैं। आप लोग इस बात को हर जगह, हर समय, हर क्षण देखते हैं।

प्रार्थना तो आज रात हम सबको अपने हृदय में करनी चाहिए कि:

'मातृत्व का यह उदार स्वभाव हमारी चेतना में आए'

जैसा मैंने आपको बताया इसे ऋतम्भरा प्रज्ञा कहते हैं–अर्थात् इस पृथ्वी माँ के स्वभाव से आपकी चेतना प्रकाशमय हो जाती है, उस स्वभाव से जो इसे भिन्न ऋतुओं से भरपूर कर देता है– यही प्रज्ञा है।

मैंने कहा, सभी के साथ यही घटित होता है परन्तु जो लोग अहम् के घोड़े पर न चढ़कर मध्य मे रहने का प्रयत्न करते हैं उनके साथ यह घटना अधिक घटित होती है।

उस तुच्छ क्षेत्र से कूदकर असीम विशाल क्षेत्र में आने के लिए यही सर्वोत्तम समय है। एक बार जब ऐसा हो जाएगा, तो आपको आश्चर्य होगा, ये सभी तुच्छ समस्याएं महानता के सागर में लुप्त हो जाएंगी। **इन समस्याओं में उलझें नहीं। इन्हें स्रोत (परम् चैतन्य) के हाथों में छोड़ दें ताकि आपकी इन सभी छोटी-छोटी समस्याओं को यह पोषक-शक्ति संभाल सके।** आप महान विवेकशील, महान पोषक, महान धर्म और महान श्रेष्ठता के स्रोत (वृक्ष) से जुड़े हुए हैं; यह समझना भी आपके लिए कठिन है कि यह वृक्ष कितना महान है।

आप एक ऐसे वृक्ष से जुड़े हुए हैं जो आपको पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है, एक ऐसे महान वृक्ष से जुड़े हुए हैं जो इस दिव्य नाटक को देखने के लिए आपको पूर्ण साक्षी भाव प्रदान करता है और जो आप को समझ प्रदान करता है कि 'पूर्ण' आप ही का अंग-प्रत्यंग है और आप पूर्ण (विराट) के अंग प्रत्यंग हैं

अतः आप प्रेम एवं उदारता के महान सागर से जुड़े हुए हैं। जीवन के इस महान वृक्ष में सभी कुछ समाहित हैं। बाइबल में इसी जीवन वृक्ष का वर्णन है, वे इसे अग्नि वृक्ष कहते हैं। अब आपकी एकाकारिता इससे हो गई है, इसका आशीर्वाद आपको प्राप्त हो गया है, यह आपको प्रेम करता है। अत्यन्त प्रेम से यह आपका पथ प्रदर्शन करता है। यह इतना कोमल है कि इसका पथ प्रदर्शन आपको महसूस तक नहीं होता–एक पत्ते की तरह से, जब वह पृथ्वी पर गिरता है।

उस शक्ति से एकाकार होने का प्रयत्न करें। यही आपकी वास्तविकता है। इस प्रकार एकाकार हो जाएं जैसे अर्थ शब्द से, चाँदनी चाँद से और धूप सूर्य से होती है

यह एकाकारिता, यह संगठन इस प्रकार आपकी पहचान बन जाए कि आप परमात्मा के प्रेम का प्रकाश बन जाएं; आपकी गहनता और उपलब्धियों से लोग परमात्मा को समझें। यह हर प्रकार से सर्वाधिक संतोषप्रदायी एवं फलदायक कार्य है, सन्तोष, शक्ति एवं प्रगल्भता (यशस्विता) प्रदायक।

इसके लिए आपको कोई त्याग करने की आवश्यकता नहीं – **आप केवल अपनी आत्मा के प्रकाश में स्वयं को संचालित करें।**

परमात्मा आपको धन्य करें।

सहस्रार पूजा - 9.5.1999, कबैला

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

हम यहाँ सहस्रार पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। संस्कृत के सहस्रार शब्द का अर्थ एक हज़ार होता है। मस्तिष्क कमल में भी एक हज़ार पंखुड़ियाँ होती हैं जो प्रकाश-रंजित हो जाती हैं। चिकित्सक लोग इस मामले को लेकर भ्रमित हैं और परस्पर वाद-विवाद में फँसे हुए हैं, परन्तु वे इस तथ्य को भूल जाते हैं।

ये पंखुड़ियाँ हमें ज्योतित करने के लिए तैयार होती हैं। ये वास्तव में नाड़ियाँ हैं- एक हजार नाड़ियाँ - जो मस्तिष्क को प्रकाशमय करने के लिए हैं; जब कुण्डलिनी उठती है तो वह इन एक हजार नाड़ियों को प्रकाशमय करती है और ये दीप शिखाओं का रूप धारण कर लेती हैं, पंखुड़ी की तरह। यही कारण है कि हम इसे सहस्रार कहते हैं - सहस्रार चक्र।

मानव में यह बहुत महत्वपूर्ण चक्र है क्योंकि केवल इसी के द्वारा हम सोचते हैं और अवांछित चीज़ों को रोकते हैं।यही केन्द्र प्रतिक्रिया करता है, ऐसी प्रतिक्रिया कि बिना सोचे समझे आप स्वतः ही कुछ चीज़ों के लिए मना कर देते हैं। छोटी-छोटी चीज़ो के लिए भी, जैसे आप कह सकते हैं कि मुझे ये कालीन पसन्द नहीं है, मुझे ये घर अच्छा नहीं लगता, मुझे वह अच्छा नहीं लगता। परन्तु आप हैं कौन? पहले इसका पता लगाएं।

मस्तिष्क जब तक खुल नहीं जाता और कुण्डलिनी का एकाकार परम चैतन्य से नहीं हो जाता तब तक आप अपनी वास्तविकता को नहीं जान सकते। इससे पूर्व अच्छे बुरे के विषय में आप पूर्ण अन्धकार में होते हैं। मस्तिष्क से सोचकर आप सभी कार्य करते हैं और उन्हें ठीक मानते हैं। परन्तु वास्तव में जो अच्छा है उसका आपको ज्ञान ही नहीं है क्योंकि आप वास्तविकता को नहीं जानते।

हमारे अन्दर जो चेतना है उसे हमें समझना है। जीवित होने की चेतना, बहुत सी अन्य चीज़ों की चेतना और बहुत सारी चीज़ों के तथाकथित ज्ञान की चेतना। यह तन्तुपट (Diaphragm) आपकी सूचना के लिए इस सारी चेतना को ज़िगर के समीप एकत्रित कर देती है। परन्तु जब ये चेतना ऊपर की ओर उठने लगती है तब आप जागरूक हो जाते हैं। विकास प्रक्रिया में आप जागरूक हो जाते है, चीज़ों के प्रति जागरूक। बिना मस्तिष्क का उपयोग किए आप जागरूक हो जाते हैं; परन्तु कैसे? विचारों द्वारा नहीं, सूझ बूझ से या देखकर भी नहीं; परन्तु आप इसलिए जागरूक हो जाते हैं क्योंकि अब आपके मस्तिष्क ने अत्यन्त संवेदनशील होकर कार्य आरम्भ कर दिया है। अतः किसी प्रकार के भय के

प्रति या अच्छाई आदि के प्रति आप सावधान हो जाते हैं।

यह प्रक्रिया यहीं समाप्त नहीं हो जाती, आगे तक चलती है। चेतना का विकास, जो कि जागरूक होता है, इससे भी आगे चलता है जहाँ आप किसी व्यक्ति को पसन्द करने लगते हैं और किसी को नापसन्द। परन्तु अब भी कुछ निश्चित नहीं होता। हो सकता है कोई व्यक्ति आपको उसकी विशेष मुखाकृति की वजह से पसन्द हो, उसकी आँखों की वजह से पसन्द हो या उसने आपके प्रति बहुत अच्छा व्यवहार किया हो। वही बिम्ब (Image) आप दूसरे लोगों में भी देखने लगते हैं। **बिम्ब स्थानान्तरण की इस प्रक्रिया से आप किसी से प्रेम करते हैं या घृणा।** तब आप कहते हैं मुझे इससे घृणा है, मुझे उससे घृणा है, परन्तु इसका कोई महत्वपूर्ण अर्थ नहीं है। हो सकता है आप किसी व्यक्ति विशेष से इसलिए घृणा करते हों क्योंकि वह किसी अन्य व्यक्ति जैसा लगता है। इससे भी आगे आप कह सकते हैं कि फलां व्यक्ति ने मुझे ये हानि पहुँचाई। तब आप को लगता है कि आपको उस व्यक्ति से घृणा करनी चाहिए और आप उससे घृणा करने लगते हैं।

इस घृणा के कारण आपमें नए अवगुण विकसित होते हैं। किस प्रकार इस व्यक्ति को हानि पहुँचाई जाए? तब आप उसे नष्ट करने और उसके जीवन को दयनीय बनाने के विषय में सोचने लगते हैं। ऐसी स्थिति में उससे मिलकर आप उस पर चिल्ला सकते हैं या उसकी हत्या का प्रयत्न भी कर सकते हैं, आप कुछ भी कर सकते हैं। तो अब आपका बोध (Awareness) उन दिशाओं की ओर बढ़ने लगता है जिधर अंधेरा है, जिधर प्रकाश नहीं है क्योंकि प्रकाश में आप ऐसे कार्य नहीं कर सकते। रोशनी में आप सभी को देखते हैं कि सब लोग बैठे हुए हैं, आप जानते हैं कि आप कितनी दूरी पर हैं और कहाँ बैठे हुए हैं। आपने यदि बाहर जाना हो तो आप जानते हैं कि किधर से जाना है। परन्तु यदि आप अंधेरे में हैं तो इसका ज्ञान आपको नहीं होता और आप इस प्रकार आचरण किये चले जाते हैं जिसे स्पष्ट नहीं किया जा सकता, केवल यही कहा जा सकता है कि आप मानव हैं। पशु ऐसा नहीं करते उनकी सीमाएं हैं। पशुओं को यदि कुछ गलत लगे, उनके लिए कुछ हानिकारक हो तो वे उस पर या तो आक्रमण कर देंगे या दौड़ जाएंगे। परन्तु पशु में घृणा भाव नहीं आ जाता। उनमें चोट पहुँचने के कारण भय की भावना आ सकती है।

परन्तु मनुष्यों में ऐसा नहीं है। मानव बिना किसी विशेष कारण के घृणा कर सकता है क्योंकि इसमें मानव का अहम् कार्यरत होता है। अहंकारी व्यक्ति को लगता है कि इच्छानुसार कुछ भी करने का उसे अधिकार है। किसी की भी वह हत्या कर सकता है, किसी को भी हानि पहुँचा सकता है, जो चाहे वह कर सकता है। परन्तु जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता वह बिल्कुल भिन्न है– वह डरपोक है, उसे किसी का भय है।

अवचेतना आगे चलती है। यह चेतना अत्यन्त सूक्ष्म है क्योंकि आपको यदि किसी का भय है तो आप उसके घर नहीं जाना चाहेंगे, गली में उससे कन्नी काटेंगे आदि आदि। तो अन्य मनुष्यों के विषय में भी आपके मस्तिष्क में इस प्रकार का सारा ज्ञान एकत्र हो जाता है। तब ये चीज़ सामूहिक स्तर पर कार्य करने लगती है क्योंकि आप सोचते हैं कि यह समूह बहुत बुरा है, वह समूह खराब है, वे अच्छे हैं, और इस प्रकार यह कार्य होता रहता है। अपने मस्तिष्क में आप सोचते हैं कि किसी का एक समूह है परन्तु इसकी अपेक्षा दूसरा समूह कहीं अच्छा है। वह समूह अच्छा है, और तब सामूहिक रूप से आप अपने पूर्ण स्वभाव और ज्ञान (चेतना) को कार्यान्वित करने लगते हैं। जैसे एक बार यदि लोग ये निर्णय कर लें कि काले लोगों को समाप्त करना है तो इस कार्य के लिए सभी गोरे लोग एकत्र हो सकते हैं। या जिस प्रकार हिटलर के समय में हुआ – उसने निर्णय किया कि जर्मन लोगों के अतिरिक्त सभी लोग बेकार हैं। अपने सोच–विचारों के प्रति उसने लोगों को कायल किया और इस प्रकार, मैं नहीं जानती कैसे, यह सामूहिक चेतना मनुष्य के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाती है। लोग ऐसे विचारों को कभी चुनौती नहीं देते, कभी नहीं पूछते कि यह गलत है या ठीक। और यह बढ़ते ही चले जाते हैं। फिर पूरा देश इन्हें मानने लगता है। कोई न समझता है न जानता है कि ये भावनाएं उचित हैं या अनुचित।

तो वास्तविकता को जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आपको भली–भाँति ज्ञान होना चाहिए कि उचित क्या है और अनुचित क्या है। इसके लिए, जैसा मैंने आपको बताया, कुण्डलिनी की महान शक्ति आपके अन्दर विद्यमान है। यही सभी चक्रों में से गुजरकर सर्वप्रथम इन्हें प्रकाशमय करती है। **तो आपकी चेतना ज्योतित है और जब यह सहस्रार को भेदती है तो आपका सम्बन्ध सर्वव्यापक शक्ति से कराती है। यही बोध है- जो कि प्रेम है, सत्य है।** तत्पश्चात् आप तुरन्त जान जाते हैं, कुछ लोग नहीं भी जानते, कि अभी तक जो कुछ सोचकर हम स्वयं को दूसरों से अलग कर रहे थे, उन्हें गलत समझ रहे थे, उन्हें बुरा समझ रहे थे, यह ठीक न था। ये विचार अब समाप्त हो जाते हैं, यह पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं और तब आप महसूस करते हैं कि आपकी चेतना भी बहुत सी परिस्थितियों से प्रभावित है। उदाहरण के रूप में आपका जन्म स्थान, माता–पिता द्वारा आपको दी गई शिक्षा, आपके अनुभव आदि। तब आपको समझ आती है कि सब गलत है क्योंकि यह वास्तविकता नहीं है। जो भी भावनाएं, अन्य लोगों या अन्य राष्ट्रों के विषय में आपमें हैं वे सब ठीक नहीं हैं। क्योंकि **अब आपका सहस्रार जागृत हो गया है, यह सर्वव्यापक शक्ति से जुड़ गया है। तो वह चेतना आपमें बहने लगती है।** मैं कहना चाहूँगी, **यह ज्योतित चेतना आपके रोम-रोम में, आपके मस्तिष्क में, नस-नाड़ियों में बहने लगती है। आप इसे महसूस कर सकते हैं।** जब भी आप किसी चीज़ के विषय में जानना चाहते हैं के

ये ठीक है या गलत, पूर्णतः ठीक या गलत–तुलनात्मक ढंग से नहीं पूर्ण रूप से, तो आप उस व्यक्ति या चीज़ की तरफ अपने दोनों हाथ कर दें। तुरन्त आप चैतन्य लहरियों द्वारा उसके विषय में जान जाते हैं।

ये चैतन्य लहरियाँ क्या हैं? यह परम चैतन्य, जिसे हम ब्रह्म-चैतन्य भी कहते है, आपकी अंगुलियों के सिरों से बहने लगता है। अब आपको पता लगने लगता है कि किसका कौन सा चक्र पकड़ रहा है और कौन ठीक है कौन गलत। आपकी विवेक–शीलता में गहन सुधार होता है। आपका मस्तिष्क जो आपको भ्रम और गलत प्रकार के जीवन में फँसा रहा था अब तुरन्त आपको ठीक रास्तों पर लाता है। मान लो मैं आँखें बंन्द करके चल रही हूँ और सामने कोई बड़ा गड्ढा है, मैं इसे नहीं देख सकती। मैं बस चलती जा रही हूँ। अचानक यदि आँखें खोलकर मैं गड्ढे को देख लूं तो एकदम से जान जाऊँगी कि इस प्रकार चलना गलत है। इस मार्ग को मैं तुरन्त बदल दूँगी। इसी प्रकार आपके साथ घटित होता है।

जब आपका सहस्रार ज्योतिर्मय हो जाता है, तो अभी तक आपने जो भी ज्ञान इसमें एकत्र किया हुआ था, जो भी कुछ अभी तक आप ठीक समझते थे, जो भी आपके स्वप्न थे, जो भी आपकी अभिलाषाएं थीं,ये सब पिघल जाते हैं और आप सत्य को अपना लेते हैं तथा हर चीज़ की वास्तविकता को देखने लगते हैं। जब तक इस वास्तविकता को आप देखने नहीं लग जाते तब तक आप अन्य लोगों की भीड़ की तरह से ही हैं क्योंकि लोग ऐसा कह रहे हैं इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए। लोग कह रहे हैं इसलिए हमें करना चाहिए। आप स्वयं ये नहीं देख सकते कि ऐसा करना उचित है या अनुचित, आपके लिए अच्छा है या बुरा, इससे आपको कोई लाभ होगा या नहीं। पूरे विश्व में इस प्रकार की चीज़ों की भरमार है। सभी प्रकार की समस्याओं का यही कारण है कि लोग सत्य को, वास्तविकता को नहीं पहचानते।

एक बार जब आपको वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा तो अधिकतर समस्याएं समाप्त हो जाएंगी क्योंकि ये मस्तिष्क ही अधिकतर समस्याओं की सृष्टि करता है। सर्वप्रथम यह सभी प्रकार के अत्याचार, हिंसा आदि करता है फिर यह अपने किए को तर्कसंगत ठहराता है और फिर इससे भी बुरा करता है। इन्हीं कर्मों को पाप (sin) कहा जाता था।

परन्तु अब सहजयोग में यह सब समाप्त हो गया है। जिन चीज़ों से आपका मस्तिष्क दूषित था अब इसका शुद्धीकरण हो गया है, इसे ज्ञान प्राप्त हो गया हैं और इसके माध्यम से आप समझ सकते हैं कि गलत क्या है और ठीक क्या है। हमेशा ठीक कार्य करें। इस मामले में आपको स्वयं निर्णय लेना होगा। अब आपको केवल ठीक कार्य करना होगा, गलत नहीं। यह बात जब आपके मस्तिष्क में बैठ जाएगी तो आपका दृढ़ निश्चय आरम्भ हो जाएगा, जिसे हम श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण कहते हैं। इससे आप अपने सभी असत्य विचार;

व्यर्थ का अहंकार तथा अन्य दोषों को त्याग देते हैं, जिन्हें आप अभी तक किए चले जा रहे थे। एक दम आप भिन्न व्यक्ति बन जाते है, एक अत्यन्त सुन्दर व्यक्तित्व।

एक अन्य परिवर्तन जो अब आपमें घटित होता है, जो अब तक कभी आपमें नहीं हुआ, वह ये है कि अब आपको ये लगता कि जब तक मैं यही अवस्था अन्य लोगों को नहीं दे दूँगा तब तक उचित न होगा, उन लोगों से बातचीत करना मेरे लिए ठीक न होगा। तब आप अपने भाइयों, बहनों, अन्य लोगों से इस ज्ञान के विषय में बताने लगते हैं। पूरे राष्ट्र से आप सहजयोग के विषय में बात कर सकते हैं कि मुझे इससे कितना लाभ हुआ है; मुझे इतना कुछ प्राप्त हो गया है, आप भी इस लाभ को क्यों नहीं पा लेते।

परन्तु अन्य लोगों से बातें करने से, बहस तथा विचार–विमर्श से या उन्हें उपदेश देने से वे इसे कभी स्वीकार न करेंगे क्योंकि उनका मस्तिष्क तो, जैसा मैंने बताया, वैसा ही है, अभी तक अज्ञानता से भरा हुआ। तो हमें उनकी कुण्डलिनी जागृत करनी होगी। एक बार जब उनकी कुण्डलिनी जागृत हो जाएगी, उनके मस्तिष्क खुल जाएंगे, तब वे आप ही की तरह ठीक मार्ग पर आ जाएंगे। उन्हें इस बात की चिन्ता न करनी पड़ेगी कि अच्छा क्या है, बुरा क्या है, स्वयं वे इस बात को जान जाएंगे। ऐसा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

विश्व को सुधारने के लिए आवश्यक है कि आप लोगों को उचित–अनुचित का ज्ञान हो और इस ज्ञान के लिए अच्छे बुरे को पहचानने के लिए आपके पास परम चैतन्य रूपी वाहन है; यह प्रवृत्ति बढ़ने लगती है और जैसा आप देख रहे हैं आज बहुत से लोगों के सहस्रार खुल चुके हैं।

सहस्रार का खुलना विकास प्रक्रिया का अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग था। विकास की अन्य सभी प्रक्रियाएं मानव को कहाँ ले गईं? लोग युद्धों में फँस गए, सभी प्रकार की मूर्खताएं की, जिनके कारण हमने बहुत से लोगों और बहुत से देशों को नष्ट कर दिया। **अब आपकी एकाकारिता इस सर्वव्यापक शक्ति से हो गई है। यह अत्यन्त शुद्ध है, अत्यन्त निर्मल है यह आपको पूर्ण विवेक और सूझ-बूझ प्रदान करती है कि अब आप किस प्रकार चलें, किस प्रकार जीवन बिताएं और किस प्रकार कार्यों को करें। लोग कहते हैं कि यही आत्म साक्षात्कार है।**

परन्तु मैं कहूँगी कि आत्मसाक्षात्कार इससे बहुत आगे है। यद्यपि ज्ञान से, सच्चे ज्ञान से आपका मस्तिष्क सम्पन्न हो जाता है, फिर भी आपको बहुत सी अन्य चीज़ों की आवश्यकता होती है; इनमें महत्वपूर्णत्तम है आपका पूर्णतः चेतन होना। एक बार फिर मैं चेतन शब्द का उपयोग कर रही हूँ। विश्व परिवर्तन की महान योजना में अपने स्थान के प्रति चेतन होना, अपने स्तर के प्रति चेतन होना। आपको जानना होगा आपकी स्थिति क्या है, इस बृह्माण्ड की कायापलट करने के कार्य में आपका क्या कर्तव्य है, आपकी क्या स्थिति है, आप कहाँ

खड़े हैं, आपके करने के लिए क्या कार्य है।

इस कार्य के लिए कुछ करना अब आपकी विवशता हो गई है। यह भयानक नहीं है और न ही कष्टकर। यह अत्यन्त शान्ति एवं आनन्द प्रदायी है और जब यह आपमें प्रबल होती है तो सन्देश देती है कि यह ज्ञान मुझे दूसरों तक भी पहुँचाना है ताकि वो भी स्वयं को पहचान सके। अतः अन्य लोगों को जानने के लिए सर्वप्रथम आपको अपने चक्रों का ज्ञान प्राप्त करना होगा। **मैं जानती हूँ कि बहुत लोग एकदम से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं परन्तु अपने चक्रों का ज्ञान उन्हें नहीं होता। उन्हें अपने चक्रों को देखना होगा कि उनके चक्र बाधित क्यों हैं। चक्रों की समस्याओं के विषय में ज्ञान हो जाने पर भी लोग उनकी ओर ध्यान नहीं देते। उनके लिए इन समस्याओं का दूर होना बहुत महत्वपूर्ण नहीं। ठीक है, मुझमें ये समस्याएं हैं, कोई बात नहीं। जब तक मैं सहजयोग का कार्य कर रहा हूँ क्या फर्क पड़ता है। यह केवल दूसरों के लिए ही नहीं है, सर्वप्रथम आपके लिए है।**

अपने चक्रों को ठीक करवाना आपके लिए बहुत आवश्यक है। यह कार्य आपके लिए महत्वपूर्णतम है, तभी आपको आत्मज्ञान होगा जिससे आप जान पाएंगे कि कमी क्या है, कहाँ है, मैं क्या गलती कर रहा हूँ तथा मुझे क्या करना चाहिए। जब आपके चक्र ठीक हो जाएंगे तो आपकी चेतना वास्तव में सारे कार्य के प्रति पूर्णतः प्रकाशवान हो जाएगी। **यह अत्यन्त विस्मयकारी उपलब्धि है। विस्मयकारी इसलिए कि यदि आप इस विक्षिप्त संसार को विवेकशील बनाना चाहते हैं तो सभी लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना होगा।**

ये कार्य कितना महान है इसकी कल्पना करें। इसको करने के लिए कितने लोगों की आवश्यकता है? परन्तु यह तभी हो सकता है जब आपकी इच्छाशक्ति दृढ़ होगी और आप अपने अन्दर इस कार्य को करने की विवशता महसूस करेंगे। परन्तु प्रायः हम लोग विवश हो जाते हैं क्योंकि हमने अपने घर चलाने होते हैं धन कमाना होता है तथा और बहुत से सांसारिक कार्य करने होते हैं। ये कार्य आप अवश्य करें परन्तु आपके जीवन का लक्ष्य लोगों को परिवर्तित करना और विश्व शान्ति के लिए इस परिवर्तन को कार्यान्वित करना है। मैं नहीं जानती कि यह भविष्यवाणी की गई कि नहीं कि पूर्ण परिवर्तन घटित होगा परन्तु इस परिवर्तन के विषय में बताया तो गया है। इसके विषय में मैं नहीं जानती और जानने का कष्ट भी नहीं करना चाहती कि कितने लोग परिवर्तित हो रहें हैं परन्तु इस परिवर्तन के बाद आपको जमना होगा, स्थिर होना होगा।

सर्वप्रथम आपको देखना चाहिए कि क्या आप शान्त है? क्या आपके हृदय में शान्ति है? आपके हृदय में यदि शान्ति नहीं है तो आप सहजयोगी नहीं हैं। यदि आप उत्तेजित हो जाते हैं और लोगों पर चिल्लाने लगते हैं तो इसका अर्थ ये है कि आप सहजयोगी नहीं हैं। आपका स्वभाव अत्यन्त शान्त होना आवश्यक है---- अत्यन्त महत्वपूर्ण।

इस शान्ति को पाकर किस प्रकार की शुद्ध करुणा आप में आनी चाहिए? जो भी कुछ आप कर रहे हैं यह केवल आपके हित के लिए ही नहीं है। इस शक्ति से विवश होकर दूसरों के हित के लिए, उनके परिवर्तन के लिए आप यह कार्य कर रहे हैं। अन्य लोगों का यही सबसे बड़ा हित आप कर सकते हैं कि उनके मस्तिष्क ठीक हो जाएं। उन्हें रोगों तथा समस्याओं से मुक्ति मिल जाए। यह सब हो जाता है परन्तु इसके साथ–साथ सबसे बड़ी चीज़ जो घटित होती है वह है उन्हें अन्य लोगों को परिवर्तित करने की शक्ति का प्राप्त हो जाना।

दूसरों को परिवर्तित करने की शक्ति जब आपको प्राप्त हो जाए तो इसे बर्बाद नहीं करना चाहिए। यह शक्ति आपको केवल अपने लिए उपयोग नहीं करनी चाहिए। इसे यदि आप अपने तक सीमित रखते हैं तो इसका अर्थ ये है कि उत्थान अभी अधूरा है। उसके विषय में अवश्य अन्य लोगों से बात करें, इसके विषय में बताऐ और इसे कार्यान्वित करें। जहाँ भी सम्भव हो इसे कार्यान्वित करें। विश्वस्तर पर हम इसी–प्रकार ऐसे लोगों को फैला सकते हैं जो पूर्ण परिवर्तन प्राप्त कर सकें।

भारत में या अन्यत्र, हमारी सभी समस्याएं मानव स्वभाव के कारण हैं। क्योंकि लोग अभी तक साक्षात्कारी नहीं हैं। जान लें कि यदि आप आत्मसाक्षात्कारी (अन्तर्प्रकाशित) हैं तो आपको लड़ाई–झगड़े जैसी कोई समस्या न होगी। अन्तर्प्रकाश प्राप्त कर लेने के पश्चात् आप अन्य लोगों के विषय में इस प्रकार सोचेंगे मानो वे आपके अपने हों, आपको उनकी चिन्ता होगी। अब आप केवल अपने विषय में नहीं सोचेंगे। अन्तर्प्रकाश प्राप्त हो जाने पर मस्तिष्क में किसी प्रकार के हिंसात्मक विचारों का प्रश्न ही नहीं होता। परन्तु यहाँ तो धर्म के नाम पर, हर चीज़ के नाम पर भयंकर हिंसा है! सभी लोग यदि सहजयोगी बन जाएं तो इस हिंसा का सुगमता से समाधान हो सकता है। सोचकर देखें कि यदि सभी लोग सहजयोगी बन जाते है तो वे परस्पर किस प्रकार झगड़ सकते हैं और कैसे, ये सब धर्म तो यहाँ हैं परन्तु इन सबसे ऊपर सहजयोगी का धर्म है जिसमें आप एक हो जाते हैं और तब धर्म के नाम पर सभी झगड़े समाप्त हो जाते हैं।

मानव के रूप में हमारी केवल यही समस्याएं ही नहीं है कुछ अन्य गम्भीर समस्याएं भी हैं। हमारी कुछ उत्कण्ठाएं हैं। हम अत्यन्त लालची हैं। हालात के साथ हम समझौता नहीं कर सकते। पूरी तरह से आराम– पूर्वक रहना चाहते हैं। परन्तु साक्षात्कार स्थापित होने के पश्चात् आप कहीं भी सो सकते हैं, कहीं भी खा सकते हैं और न खाएं तो भी चल सकता है। आप ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो इन सभी आवश्यकताओं और मांगों से ऊपर उठ जाता है। तब आपको कोई चिन्ता नहीं रह जाती, आप बिल्कुल चिन्ता नहीं करते। चिन्ता किसलिए? मान लो मैं कहीं खो जाती हूँ, मेरी कार गलत दिशा में चल पड़ती है। ठीक है,

मुझे उधर ही जाना होगा, इसीलिए मैं इस प्रकार जा रही हूँ। इसके विषय में परेशान होने की क्या बात है?

जीवन में छोटी–बड़ी बहुत सी घटनाएं होती हैं जिनके लिए हम परेशान हो उठते हैं परन्तु अब सहस्रार की कृपा से, आप हैरान होंगे, परम–चैतन्य की सहायता मिलने लगती है और यह चमत्कारिक सहायता है जो पूरे ब्रह्माण्ड में, व्यक्ति विशेष पर, समुदायों पर और राष्ट्रों पर कार्य करती है क्योंकि एक दिव्य नाटक चल रहा है। यह दिव्य नाटक महान सुन्दर कार्य करता है जिनके द्वारा लोग स्वयं को सुधारने लगते हैं। **अतः कभी व्याकुल न हों, कभी परेशान न हो, क्योंकि अब आपमें दिव्य शक्ति आ गई है जो सब कुछ ठीक कर देगी।**

यह किसी को भी सुधार सकती है। हाल ही में एक लड़के का मामला हमारे सामने आया था, ट्रक दुर्घटना में जिसके फेफड़े क्षतिग्रस्त हो गए थे। फेफड़े पर यदि गहन चोट आ जाए तो ऐसा व्यक्ति कभी सामान्य नहीं होता। परन्तु वह लड़का सामान्य हो गया और सामान्य रूप से श्वास लेने लगा। ये सारा कार्य परम चैतन्य ने किया है। **आपको कुछ नहीं करना पड़ता। आपको कुछ नहीं करना पड़ता। आपके सामने समस्याएं आती हैं, तो इससे पहले कि ये आपको छू सकें परम चैतन्य इनका समाधान कर देता है। परन्तु आपको स्वयं पर और परम चैतन्य पर पूर्ण विश्वास करना होगा और विश्वस्त होना होगा कि आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता।** हो सकता है कुछ समय के लिए कोई आपको परेशान करने का प्रयत्न करे और आपको कुछ कष्ट सहना भी पड़े परन्तु आप उस कष्ट से प्रभावित नहीं होते, उसके चंगुल से निकल जाते हैं। ऐसी सुरक्षा, ऐसा पथ प्रदर्शन आपको उपलब्ध है। सभी प्रकार के आक्रमणों तथा जो गलतियाँ आप करते हैं उनसे आपकी रक्षा की जाती है। यह बहुत बड़ा कम्पयूटर ज्ञान है। वह (परमचैतन्य) जानता है कि आप क्या कर रहे हैं, आपको क्या नहीं करना चाहिए, आप कहाँ जा रहे हैं, आपको क्या करना चाहिए और आपको कौन से रास्ते नहीं चलना चाहिए। यह सभी कुछ जानता है, आपके विषय में सभी कुछ जानता है।

तो इसके विषय में कब आपको चेतन होना है? मैं ये कहूँगी कि **अब वह समय है जब आपको इस बात के प्रति चेतन हो जाना चाहिए कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं, अन्य लोगों से भिन्न हैं और अत्यन्त अद्वितीय हैं। आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, सर्वसाधारण व्यक्ति नहीं हैं और परम चैतन्य द्वारा सुरक्षित हैं। कोई भी आपको परिवर्तित नहीं कर सकता, कष्ट नहीं दे सकता, आपको पराजित नहीं कर सकता। क्योंकि आप परम चैतन्य के विषय में जागरूक नहीं हैं इसीलिए आप थोड़े से चिन्तित हो उठते हैं।** लोग मुझे लिखते हैं, श्री माताजी मेरी बेटी को यह समस्या है आदि–आदि।

यदि आप समस्याओं को परम-चैतन्य पर छोड़ना जानते हैं, यदि आप समझते हैं कि किस प्रकार आपकी एकाकारिता परम चैतन्य से है तो परम चैतन्य सभी कुछ ठीक कर सकता है। आप परम चैतन्य के अंग-प्रत्यंग हैं। वही परम-चैतन्य आपकी देख-रेख कर रहा है। आपको कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना। विशेष प्रयत्न करने की कोई आवश्यकता नहीं।

जीवन जैसा है वैसे ही इसे स्वीकार करें। जिस प्रकार भी आपका जीवन है, इसे स्वीकार करें। प्रतिकार न करें, गुस्से न हों, परेशान न हो। जीवन को स्वीकार कर लें और जो जीवन अभी तक आपको क्षुब्ध करता था उसी में आपको आनन्द आने लगेगा। उसके आनन्ददायी भाग को आप देखेंगे और यह बहुत सुन्दर होगा। जब आप देखेंगे कि किस प्रकार आप अपनी समस्यांओं का समाधान करते हैं, किस प्रकार शत्रुओं पर काबू पाते हैं तो आपको महसूस होगा कि कितना नया और सुन्दर जीवन आपको प्राप्त हो गया है !

अब आप सभी सहजयोगी अत्यन्त महान स्थिति में हैं। इस स्थिति में यदि आप विनम्र हो जाएं, तो आप हैरान होंगे, कि आप इस परम–चैतन्य से जुड़ गए हैं। केवल इतना ही नहीं आप परम चैतन्य बन गएं हैं। इस परम चैतन्य से आप कुछ भी कर सकते हैं। मुझे ये बताने की आवश्यकता नहीं कि आप क्या कर सकते हैं क्योंकि हो सकता है कि आपमें से कुछ लोगों को विश्वास न हो। परन्तु **यह मेरा अपना अनुभव है कि यदि आप परम-चैतन्य हैं, यदि आप यह जानते हैं कि आप परम-चैतन्य हैं तो यह आपकी गरिमा, आपके पद को बनाए रखता है, आपके सभी वचन पूरे करता है और आपकी देखभाल करता है।** जो भी कुछ आप कहते हैं, जिस चीज़ की भी आप इच्छा करते हैं वह पूर्ण हो जाती है।

आपकी इच्छाएं भी परिवर्तित हो जाती हैं। व्यर्थ की चीज़ों की इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं। आपकी इच्छा अब श्रेष्ठ बन जाती है। आप लोगों का परिवर्तन करना चाहते हैं, सहजयोग कार्य करने की इच्छा करते हैं। जब आप ये इच्छाएं करते हैं, इन्हें पसन्द करते हैं और इनके विषय में सोचते हैं तो ये पूर्ण हो जाती हैं। यदि किसी चीज़ को आप मात्र देख लें तो, आपको हैरानी होती है, परम चैतन्य तुरन्त इस कार्य को सम्भाल लेता है, आपको किसी भी प्रकार की समस्या नहीं रह जाती, बिल्कुल कोई समस्या नहीं रह जाती, क्योंकि अभी तक जीवन की जिन कठिनाइओं और बाधाओं के प्रति हम प्रतिक्रिया किया करते थे अब एक खेल बन जाती है। मात्र खेल। आप आश्चर्य चकित होते हैं कि आपने एक समस्या की ओर देखा तो वह समाप्त हो गई, दूसरी समस्या की ओर देखा तो वह समाप्त हो गई। इसी प्रकार से यह प्रकाश अंधेरे में प्रवेश करके इसका अन्त कर देता है। अन्धेरा समाप्त होता है और हमारी समस्याएं भी समाप्त हो जाती हैं।

तो हमारी चेतना को यही बनना है– चेतना

को परम चैतन्य बनना है। तभी आपको ये सब विचार, यह सारी दिव्यता प्राप्त होती है। केवल इतना ही नहीं परमेश्वरी सहायता या परमेश्वरी समाधान भी समाप्त हो जाता है। यह सब आश्चर्यचकित करने वाला है और अत्यन्त शान्त एवं दृढ़ है। सभी कुछ शान्त हो जाता है और यह सब देखकर आप हैरान हो जाते हैं कि इन सब कार्यों के केन्द्र बिन्दु आप हैं। आपको पता भी नहीं होता कि आप कुछ कर रहे हैं पर आप कुछ कर रहे होते हैं। आपकी क्रियाओं में से अहम् तत्व गायब हो जाता है। आप देखते हैं कि सभी कुछ आपके ईर्द–गिर्द घटित होता है, कि यह सब किस प्रकार हो रहा है। जीवन की पूरी शैली ही परिवर्तित हो जाती है। पूरी सूझ–बूझ परिवर्तित हो जाती है और आप दूसरों के लिए प्रसन्नता, आनन्द एवं ज्ञान के स्रोत बन जाते हैं। इसके लिए आपको कोई अध्ययन नहीं करना पड़ता, कुछ अधिक ज्ञान नहीं प्राप्त करना पड़ता, फिर भी आपको सभी चीज़ों का ज्ञान हो जाता है, कि ठीक क्या है और गलत क्या है। केवल तभी आप पूर्ण अधिकार के साथ कह सकते हैं कि यह चीज़ ठीक नहीं है। जैसे आज ही हमने आधुनिक काल की आर्थिक स्थिति और अर्थशास्त्र पर चर्चा की। मैंने कहा कि यह सब गलत है क्योंकि यह आत्मघाती है, राष्ट्रों के लिए यह दुर्व्यवस्था है; संभवतः आपके राष्ट्र के लिए न हो परन्तु अन्य राष्ट्रों के लिए है। यह आपके पारिवारिक जीवन को भी नष्ट करती है और आपकी मूल्य प्रणाली (value system) को भी। ये आपको पूर्णतः नष्ट कर देती है तो कैसी अर्थव्यवस्था है यह? यह मात्र दिखावा है एक गुब्बारे की तरह जो किसी भी क्षण फट सकता है। मैंने लोगों को देखा है जो बहुत अमीर थे परन्तु एक दम दिवालिए हो गए और बहुत से दिवालिए लोग धनवान हो गए। इस प्रकार की उथल–पुथल में वे एक तट से कूदकर दूसरे तट पर चले जाते हैं। परन्तु आप लोग ऐसा नहीं करते। आप इस नाटक को देखते हैं। शान्ति पूर्वक, बड़ी सबूरी से आप इस सारे नाटक को देखते हैं। इस प्रकार के बहुत से लोग बना लेना आपके लिए कठिन कार्य नहीं है। इस संसार को परिवर्तित कर देना आपके लिए कठिन नहीं है। अब समय आ गया है। प्रयत्न करें, केवल प्रयत्न करें। जैसे बसन्त ऋतु में बहुत से फूल खिलते हैं इसी प्रकार आप सब लोग भी खिल उठे हैं।

अब सहजयोग फैलाने के लिए बीजों की सृष्टि करना आप पर निर्भर करता है। आप चेतना के स्तर पर हैं जहाँ परम चैतन्य आपके साथ है, आपके अभिन्न अंग के रूप में हर आवश्यक सहायता, हर वांछित सम्मान एवं व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए परम चैतन्य पूर्णतः आपके साथ है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री फ़ातिमा बी पूजा, 14.8.88, सेन्टजार्जश्वेस

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

श्री फातिमा बी गृहलक्ष्मी का प्रतीक थीं तो आज हम अपने ह्रदय में गृहलक्ष्मी तत्व की पूजा करेंगे। घर में स्त्री जिस प्रकार सभी कार्य समाप्त करके स्नान आदि करती है उसी प्रकार आज प्रातः मुझे भी बहुत से कार्य करने पड़े और तब मैं पूजा के लिए आ पाई. घर में आज गृहणी के करने योग्य बहुत से कार्य थे और एक अच्छी गृहणी की तरह से मुझे वे सब कार्य समाप्त करने थे।

गृहलक्ष्मी तत्व की सृष्टि तथा विकास परमात्मा ने किया है। यह मानव की रचना नहीं है क्योंकि, जैसे आप जानते हैं गृहलक्ष्मी का स्थान बाई नाभि में है। मोहम्मद साहब की पुत्री श्री फातिमा के जीवन में गृहलक्ष्मी का निरूपण हुआ है। वे सदैव किसी महान गुरू के पावन सम्बन्धी के रूप में अवतरित होती हैं। अतः वे पुत्री के रूप में आई। हज़रत मोहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् धर्मान्ध लोगों ने सोचा कि उनके द्वारा दिए गए धर्म को अपने हाथों में लेकर इसे भी कट्टर बना दिया जाए। व्यक्ति के उत्थान की ओर चित्त नहीं दिया जाता था। मोहम्मद साहब ने अपने दामाद का वर्णन बहुत प्रकार से किया है। पृथ्वी पर अवतरित होने वाले वही श्री ब्रह्मदेव के दूसरे अवतरण थे। अली इस पृथ्वी पर अवतरित हुए, वे ब्रहमदेव के अवतरण थे और उनका दूसरा अवतरण सोपान देव के रूप में हुआ। पुणें जाकर आप सोपान देव का मन्दिर देख सकते हैं। तो अली और उनकी पत्नी फातिमा बाई नाभि तत्व पर अवतरित हुई। वे गृहणीं थीं, अपनी गृहस्थी में व्यस्त रहती थीं, पर्दा या नकाब पहनती थीं। चेहरे को पर्दे से ढकना इस बात का प्रतीक है कि गृहणी को अपना चेहरा ढक कर अपनी पावनता की रक्षा करनी होती है। फातिमा एक बहुत सुन्दर महिला थीं। उनका जन्म ऐसे देश में हुआ जहाँ लोग बहुत हिंसात्मक थे और यदि वे पर्दा धारण न करतीं तो निश्चित रूप से उनपर आक्रमण हो जाता । ईसामसीह के जीवन से जैसा आपको पता लगता है कि यद्यपि माँ मैरी महालक्ष्मी का अवतरण थी, उन्हें अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्तित्व बनना पड़ा। परन्तु ईसामसीह नहीं चाहते थे कि कोई भी यह बात जान पाए कि मैरी क्या थीं। श्री फ़ातिमा यद्यपि गृहणी थीं फिर भी वे शक्ति थीं। उन्होंने अपने पुत्रों को आज्ञा दी कि मोहम्मद साहब के प्रभुत्व को चुनौती देने वाले धर्मान्ध लोगों से युद्ध करें। और आप जानते हैं कि इस युद्ध में उनके दोनों बेटे हसन और हुसैन शहीद हो गए। सीता जी का महालक्ष्मी

तत्व का सुन्दर गृहलक्ष्मी तत्व को स्थापित करने के लिए विष्णुमाया रूप धारण करना अत्यन्त सुन्दर घटना है। निःसन्देह श्री फ़ातिमा अत्यन्त शक्तिशाली थीं और वे जानती थीं कि उनके बच्चे शहीद हो जाएंगे परन्तु ये लोग कभी नहीं मरते; ये न कभी मरते हैं और न हीं इन्हें कोई कष्ट होता है। लोगों को उनकी मूर्खता दर्शाने के लिए अवतरणों का यह सब नाटक खेलना होता है। इसके परिणाम स्वरूप एक अन्य प्रथा चालू हुई जिसमें लोगों ने सन्तों का सम्मान करना आरम्भ किया, जैसे भारत में शिया लोग औलियाओं का सम्मान करते हैं। इस औलियाओं को आत्मसाक्षात्कारी भी कहा जा सकता है, जैसे निज़ामुद्दीन साहिब, फिर अजमेर के हज़रत चिश्ती। शिया लोगों ने इन सब महान सन्तों का सम्मान किया। उन्होंने इन महान सन्तों का सम्मान किया फिर भी वे धर्म की सीमाओं से ऊपर न उठ पाए और परिणामस्वरूप अत्यन्त धर्मान्ध बन गए। किसी दूसरे धर्म के सन्तों का वे सम्मान न कर सकते थे चाहे वो शिरडी साईनाथ जैसा महान सन्त ही क्यों न हो जो आरम्भ में मुसलमान था।

कहा जाता है कि श्री फ़ातिमा स्वयं उन बच्चों को अपनी गोदी में उठा कर लाई और किसी महिला को पालने के लिए दे दिया। ऐसा कहा जाता है। जहाँ तक हिन्दु लोगों का प्रश्न है उन्होंने कभी शिरडी साईनाथ के साधुत्व को नहीं नकारा परन्तु मुसलमानों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। ऐसे ही एक अन्य सन्त हैं हाजी मलंग। इनकी दरगाह बम्बई के पास है। वे एक आत्मसाक्षात्कारी सन्त थे। उन्हें भी शिया लोगों की धर्मान्धता का सामना करना पड़ा।

शिया शब्द का उदगम् सिया से हुआ। उत्तर प्रदेश में सीताजी को सिया कहा जाता है। शिया लोगों ने कभी महसूस नहीं किया कि कुछ लोग मुसलिम न होते हुए भी महान सन्त हैं। यही कारण है कि वे अपनी धर्मान्धता से छुटकारा न पा सके। हाज़ीमलंग को हिन्दु लोग मानते हैं, कुछ मुसलमान भी वहाँ जाते हैं। हाजी मलंग शिया लोगों की धर्मान्धता के कारण चिन्तित थे इसलिए उन्होंने अपनी पूजा के लिए कुछ हिन्दु लोगों को नियुक्त किया ताकि सन्तुलन बना रहे। इन लोगों ने सभी प्रकार के काम किए। ऐसे बहुत से सन्त हैं। मैं भोपाल गई। वहाँ पर एक महान सन्त की समाधि है। परन्तु उनके अनुयायी वहाँ पर होने वाली कमाई से अपना जीवन चलाते हैं और उस स्थान की देखभाल अच्छी तरह से नहीं करते।

हज़रत निज़ामुद्दीन के अनुयायी भी हिन्दुओं की तरह से वहाँ पर चढ़ाए गए धन से अपना खर्च चलाते हैं और इस प्रकार ये सब व्यापार बन गया है। मैं जब भोपाल गई तो उन लोगों से पूछा कि तुम्हारा धर्म क्या है? तो उन्होंने कहा कि हम मुसलमान हैं। मैंने पूछा, "ये सन्त जिनकी मृत्यु हुई है, इनका धर्म क्या था?" उन्होंने उत्तर दिया, "सन्तों का कोई धर्म नहीं होता।" तो मैंने कहा कि आप लोग क्यों धर्म का अनुसरण करना चाहते हैं? सन्तों का कोई धर्म नहीं होता। संस्कृत में भी

कहा गया है कि सन्यासियों का कोई धर्म नहीं होता। वे धर्मातीत होते हैं, धर्म से ऊपर उठ जाते हैं। परन्तु जिस प्रकार सभी धर्मों के साथ होता है वैसा ही शिया, सुन्नी, हिन्दु, मुसलमान तथा सभी लोगों के साथ हुआ। सबने कट्टरपंथी समूह बना लिए।

धर्मान्धता भी आप में अन्तर्जात धर्म के विरुद्ध है क्योंकि यह ज़हर की सृष्टि करती है। धर्मान्धता विषैली चीज़ है जो दूसरों से घृणा सिखाती है। जब आप दूसरों से घृणा करने लगते हैं तो भयानक विष की तरह से ये आपके अन्दर प्रतिक्रिया करती है और आपके अन्तर्निहित सारे सौन्दर्य को खा जाती है। घृणा मानव का निकृष्टतम अवगुण है। फिर भी मनुष्य घृणा कर सकता है, उसके जो जी में आए कर सकता है। पशु किसी से घृणा नहीं करते, उन्हें घृणा करनी आती ही नहीं। स्वभाव वश वे किसी को काट सकते हैं, काटना उनका स्वभाव है। उन्हें कोई व्यक्ति अच्छा न लगता हो परन्तु घृणा तो मानवीय धारणाओं तथा मानवीय लगन की विशेषता है। केवल मनुष्य ही घृणा कर सकता है। ये भयानक घृणा मुसलमानों में भी ज़हर की तरह से फैल गई। यह करबला घृणा के लिए नहीं बनाया गया था। प्रेम के लिए बनाया गया था। हर चीज़ जो प्रेम के लिए बनाई गई थी उसे सभी धर्मों ने घृणा में परिवर्तित कर दिया। इसमें सबसे बुरी बात ये है कि घृणा करने वाले लोग दूसरों को निकृष्टतम मानते हैं और दूसरे लोग उन्हें। किस नियम, कानून या तर्क के अन्तर्गत वे ऐसा करते हैं, यह देखना उनका कार्य है। इस प्रकार वे सब एकत्र हो गए। जबकि गृहलक्ष्मी तत्व की सृष्टि विशेष रूप से घृणा को वश में करने के लिए और इसे बर्फीली घृणा को शान्त करके लोंगों के मस्तिष्क से निकाल फेंकने के लिए की गई थी। आप यदि गृहणी हैं तो आपको ज्ञान होना चाहिए परिवार में गृहलक्ष्मी तत्व से किस प्रकार बच्चों में परस्पर घृणा को समाप्त करना है, पति और बच्चों में से किस प्रकार घृणा को शान्त करना है। परन्तु यदि गृहलक्ष्मी स्वयं ही इस घृणा का आनन्द लेती है तो किस प्रकार वह इसे शान्त कर सकती है? वह तो घृणा को दूर करने वाली शान्ति का स्रोत है। भारत में संयुक्त परिवार हैं। आप लोगों के भी सम्बन्धी है जैसे चाचे–चाचियां, मामे–मामियां आदि। गृहलक्ष्मी का कार्य है कि उनके मध्य वैमनस्य उत्पन्न करने वाले मतभेदों को शान्त करे।

पुरुषों के लिए आवश्यक है कि गृहणी का सम्मान करें। कहा जाता है 'यत्र नार्या पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता'– जिस घर में गृहणी का सम्मान होता है वहीं देवता निवास करते हैं। हमारे देश में यह श्रेय गृहणी को जाना चाहिए।

अर्थशास्त्र, राजनीति और प्रशासन के लिए हमारी महिलाएं बेकार है। पुरुष वर्ग घर के काम–काज के लिए बेकार है। घर के काम काज को महिलाओं ने अपने तक ही सीमित रखा है। परन्तु हमारा समाज बहुत अच्छा है। गृहणियाँ इसे चला रहीं हैं। अतः पुरुषों को चाहिए कि महिलाओं का सम्मान करें। यह अत्यन्त आवश्यक है। पुरुष यदि अपनी पत्नी

का सम्मान नहीं करता तो गृहलक्ष्मी तत्व के बने रहने की कोई सम्भावना नहीं बनी रहती। यह गृहलक्ष्मी तत्व को बनाए रखने जैसा है। परन्तु बहुत से पुरुष सोचते हैं कि पत्नियों को सताना, उन पर क्रोध करना और सभी प्रकार की उल्टी–सीधी बातें कहना उनका जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसा व्यवहार केवल भली महिलाओं के साथ ही होता है परन्तु यदि महिलाएं भूत हों, परेशान करने वाली हों तो पति उनसे दब जाते हैं। ऐसी पत्नियों के पति सदा किसी न किसी प्रकार से उन्हें रिझाने में लगे रहते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि ये तो भूत है, इससे सावधान रहना ही ठीक है। न जाने किस समय ये भूत साँप की तरह से आप पर झपट पड़े? यदि ऐसी महिला परेशान करना या बहस करना भी जानती हो तो भी पुरुष उनसे डरते हैं। उसके लिए पुरुष के मन में कोई प्रेम और सम्मान नहीं होता। पुरुष उससे डरते हैं। ऐसी महिलाओं से पुरुष डरते हैं। कुछ महिलाएं सोचती हैं कि नाज़-नखरे की प्रवृत्ति से पति भली–भांति वश में किए जा सकते हैं। परन्तु इस प्रकार वे अपने मूल तत्व, मूल शक्ति को ही खो देती हैं और कठिनाई में फँस जाती हैं।

अपने पावित्र्य का सम्मान, अन्दर और बाहर पवित्रता का सम्मान करना गृहलक्ष्मी तत्व का आधार है। यही उनका संबल है। निःसन्देह अधिकतर पुरुष इस बात का लाभ उठाते हैं। पत्नी यदि आज्ञाकारी एवं विनम्र है तो वे उस पर शासन जमाना चाहते हैं, सभी प्रकार से उसे दबाते हैं। परन्तु गृहणी को यह समझना होगा वह आज्ञापरायण नहीं है, वह तो अपनी धर्मपरायणता, अपने चरित्र और अपने गुणों के प्रति आज्ञाकारी है। पति यदि बच्चे की तरह से बुद्धु है तो ठीक है, पर पति को भी यह समझना चाहिए कि यदि वह पत्नी का सम्मान नहीं करता तो उसकी दुर्दशा हो जाएगी। ऐसा पति बेकार है। सर्वप्रथम उसे देखना होगा कि गृहणी का गृहलक्ष्मी रूप में सम्मान करने पर ही आर्शीवाद प्राप्त होंगे। उसे किसी भी प्रकार से न तो पत्नी का अपमान करना चाहिए न उसके प्रति क्रूर होना चाहिए और न ही ऊँची आवाज में उससे बात करनी चाहिए। परन्तु पत्नी को भी सम्माननीय होना होगा। मैंने बहुत बार कहा है यदि आपकी पत्नी व्यर्थ में रोब जमाए तो उसके मुँह पर दो चाँटे रसीद करो। पत्नी को भी व्यर्थ का रोब जमाने वाला न होकर दूसरों के अन्दर से भी रोब जमाने के इस दोष को दूर करना है। वह शान्ति एवं आनन्द का स्रोत है, शान्ति संस्थापक है। यदि वह किसी प्रकार समस्या खड़ी करती है तो आप उसे चाँटा मारकर उचित स्थान पर ला सकते हैं। ये ठीक है।

गृहलक्ष्मी तत्व पारस्परिक है। यह न तो केवल पति पर निर्भर है न केवल पत्नि पर, दोनों पर निर्भर है। यदि आप अपनी पत्नी को कष्ट देते हैं तो आपकी बाईं नाभि कभी ठीक नहीं हो सकती, या यदि आप अच्छी पत्नी नहीं हैं तो आपकी बाईं नाभि कभी ठीक नहीं हो सकती। पश्चिम की महिलाओं के साथ समस्या ये है कि वो अपनी शक्तियों को नहीं पहचानती। अस्सी साल की बूढ़ी औरत भी दुल्हन की

तरह से दिखाई देना चाहती है। वे अपनी गरिमा को महसूस करके उसका आनन्द नहीं लेना चाहती। वे घर की महारानियाँ हैं परन्तु हल्की, बचकानी, छिछोरी लड़कियों की तरह से व्यवहार करना चाहती हैं। अपने अस्तित्व की गरिमा का उन्हें एहसास ही नहीं है। वे बहुत अधिक बोलती हैं और उनका आचरण ऐसा है जो किसी गृहणी को शोभा नहीं देता। बात करते हुए वे अपने हाथों को मछुआरिनों की तरह से नचाती हैं। मानो मछुआरिनों ने मछलियाँ बेचनी हो या किसी से झगड़ना हो। वे मूर्खतापूर्वक चिल्लाती हैं। मैंने सुना है कि कभी–कभी तो वे अपने पतियों को पीट देती हैं। ये पराकाष्ठा है। ऐसी महिलाएं अपने पतियों की तुलना अपने अमीर पिता से करने लगती हैं मैं उस सेठ की बेटी हूँ, मैं उस परिवार से सम्बन्धित हूँ, मेरे पति घटिया परिवार से हैं। उसके पास धन नहीं है, वो पढ़ा लिखा नहीं है। इस प्रकार वे पति से दुर्व्यवहार करती हैं, उसका सम्मान नहीं करती। ऐसी महिलाओं की सभी शक्तियाँ नष्ट हो जाएंगी। वे अपने आप में दोष भाव ग्रस्त हो जाएंगी क्योंकि सहजयोग में किसी अन्य को घटिया समझने का अधिकार किसी को नहीं है, अपने पति को घटिया समझना तो समझ में ही नहीं आता। चाहे वह सहजयोगी न हो, चाहे उस स्तर का न हो। परन्तु अपने आचरण और शक्ति से आप उसकी रक्षा कर सकते हैं, क्यों आप अपनी पावनता को बर्बाद करती हैं? दूसरों पर रोब जमाने से, उनका गला दबाने से, अपने पति को कुएँ का मेंढक बनाकर उसे ये कहकर कुछ नहीं प्राप्त किया जा सकता। यह कहना कि हमारा अपना एक घर होना चाहिए जहाँ हम आनन्द से रह सकें, तो ऐसे घर में कोई नहीं आएगा, चूहा भी ऐसे घर में नहीं घुसेगा। मेरे बच्चे, मेरे पति, मैं यह सब कहना सहजयोग में निषेध है। ऐसा कहना नकारात्मकता है। यह सब पूर्णतः निरर्थक चीज़े हैं जो किसी सहजयोगी और सहजयोगिनि को शोभा नहीं देतीं। इस प्रकार स्वार्थता, एकान्तप्रियता सहजयोग के विपरीत है।

गृहणी को जब खाना बनाना होता है तो वह सोचती है कि पचास लोग आने वाले हैं, मैं कितना खाना बनाऊँ? पति कहेगा कि केवल दस लोग आ रहे हैं तुम पचास लोगों के लिए खाना क्यों बनाना चाह रही हो? हो सकता है वह ज्यादा खाना चाहें। परन्तु तुम पचास प्लेटें क्यों रख रही हो? हो सकता है वह अपने दोस्तों को साथ ले आएं। तो गृहलक्ष्मी अपनी उदारता के विषय में सोचती है और उसका आनन्द लेती हैं। मैंने ऐसी बहुत सी गृहणियों को देखा है यद्यपि वे सहजयोगी भी न थी। भाभी क्या तुम हमारे यहाँ खाने पर आओगी? नहीं मैं नहीं आऊंगी, तुम बहुत ज्यादा चीज़ें बनाती हो, मैं नहीं आऊंगी। नहीं, नहीं मैं बहुत थोड़ी चीज़ें बनाऊंगी, आप आना ज़रूर। और फिर तुरन्त वह सोचने लगती है कि आजकल बाज़ार में कौन सी सब्जियाँ हैं, मुझे क्या लाना चाहिए? सबसे अच्छा क्या है? कहने से मेरा अभिप्राय ये है मैं न तो उनकी गुरु हूँ न उनकी माँ हूँ। मात्र उनकी सम्बन्धी हूँ। परन्तु

भोजन के माध्यम से वे अपना प्रेम अभिव्यक्त करना चाहती हैं। वे अन्नदा हैं, अन्नपूर्णा हैं। किसी गृहणी में उदारता का ये गुण यदि नहीं है तो वह किसी भी प्रकार से सहजयोगिनी नहीं है। यह मेरा कहना है। पति तो कुछ हद तक कंजूस हो तो चल जाता है परन्तु पत्नी का उदार होना आवश्यक है। कभी कभी तो वह अपनी कीमत पर भी न केवल बच्चों को बल्कि अन्य लोगों को भी धन देती है। सहजयोग में महिलाओं को इतना ही सुन्दर होना चाहिए। परन्तु यह देखकर मुझे कई बार चिन्ता होती है कि मुझ पर सहजयोगी महिलाएं ही आक्रमण करती हैं पुरुष नहीं, मैं स्वयं भी एक महिला हूँ, मुझे सदमा लगता है जब महिलाएं इस प्रकार मुझ पर आक्रमण करती हैं।

सहजयोग में किसी भी प्रकार का प्रभुत्व आदि नहीं है। प्रभुत्व एवं दासत्व के ये सभी असत्य विचार आपकी सूझ–बूझ एवं अहम् के कारण हैं। आपने स्वयं को नहीं पहचाना। आप नहीं जानते की आप तो रानी हैं, कौन आप पर प्रभुत्व जमा सकता है। गृह–स्वामिनी पर कौन प्रभुत्व जमा सकता है? मान लो यदि पति कहता है कि मुझे यह रंग पसन्द नहीं है, तो ठीक है, कुछ समय के लिए वो रंग छोड़ दो। तभी कोई आकर यह कहेगा कि यह "कितना अच्छा रंग है"? तो आपके पति एकदम से कहेंगे कि यह रंग मत छोड़ो। महिलाओं को चाहिए कि पुरुषों को समझें, उनकी आँखे बड़ी–बड़ी होती हैं परन्तु सूक्ष्म नहीं होती। मोटे रूप से वे सभी कुछ देखते है। आज वे कुछ कहेंगे और कल कुछ और। उनकी दृष्टि सूक्ष्म नहीं है। वे इन चीज़ों से ऊपर हैं। आप उन्हें भलीभांति समझें। परन्तु पुरुष यदि घोड़े पर बैठता है तो मैं भी घोड़े पर बैठूंगी और गिरुंगी। वह यदि बर्फ–कूद (skiing) के लिए जाता है तो मैं भी जाऊँगी। वह यदि मज़बूत मांसपेशियाँ बनाता है तो मैं भी बनाऊंगी। आजकल ऐसा ही हो रहा है। महिलाएं स्वयं को बड़ा ही अजीबो–गरीब बना रही हैं। बिना मूछों की बड़ी–बड़ी मांस-पेशियों वाली। इस प्रकार के सभी बेवकूफी भरे विचार हैं और किसी भी प्रकार की कोई रोक–टोक नहीं।

आप अपनी गरिमा, पावनता, सम्मान, विवेक और सर्वोपरि धर्मपरायणता के आधीन हैं क्योंकि आपके ऊपर इनका भार है। कार्यभारी व्यक्ति को यह सब देखना होता है। आप कितने झगड़े खड़े करती हैं? आपसे तो शांति संस्थापना की आशा की जाती है, किस प्रकार आप झगड़ालू हो सकती हैं। मान लो हम दो लोगों को शांति स्थापना के लिए किसी देश में भेजते हैं, और वे यदि एक–दूसरे का गला काट दें तो ऐसी चीज़ को हम क्या कहेंगे? आप ही लोगों ने सभी कुछ शांत करना है। आपने इतने प्रेम की अभिव्यक्ति करनी है, इतना माधुर्य देना है कि परिवार आपकी सुरक्षा में चैन महसूस करे, क्योंकि आप माँ है। परिवार को आपसे सुरक्षा मिलनी चाहिए, ये प्रेम आपकी शक्ति है। प्रेम प्रदान कर पाना आपकी शक्ति है और प्रेम देते हुए आपको लगेगा कि आप स्वयं को समृद्ध कर रही है। जो उपहार मुझे प्राप्त होते हैं उनके मुकाबले में आप देखें कि मैं क्या देती हूँ! मुझे लगता है कि इन्हें रखने

के लिए मुझे एक और घर बनाना पड़ेगा। मैं इन सबसे कह रही हूँ कि व्यक्तिगत रूप से मुझे कोई उपहार न दे। मैं व्यक्तिगत उपहार न लूँगी। फिर भी मेरी समझ में नहीं आता; प्रेम से दी गई किसी चीज़ का प्रेम स्वयं को अभिव्यक्त करता है और कविता की तरह उसका असर आप पर होता है। आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं। मैं अपने जीवन का एक उदाहरण आपको दूँगी जो यह दर्शाएगा कि किस प्रकार प्रेम कार्य करता है।

आरम्भ में, और मैं सोचती हूं अन्त तक, मैं एक गृहणी थी। मैं दिल्ली में थी, मेरी बेटी का जन्म होने वाला था और घर के बगीचे में बैठी हुई मैं उस के लिए कुछ बुन रही थी। तभी तीन व्यक्ति, एक महिला और दो पुरुष घर में आए। आकर वह महिला कहने लगी कि मैं एक गृहणी हूँ और इन दो पुरुषों में से एक मेरे पति हैं और एक उनका मित्र है, जो कि मुसलमान है। हम शरणार्थी हैं और आपसे शरण लेने के लिए आए हैं। मैंने उनकी ओर देखा। वे मुझे बहुत अच्छे लोग प्रतीत हुए। मैंने कहा, ठीक है आप मेरे घर में रुक जाइए। मैंने उन्हें बाहर का कमरा दे दिया जिसके साथ रसोई और स्नानागार जुड़े हुए थे। तीसरे व्यक्ति के लिए मैंने उनसे कहा, एक अन्य कमरा है, वे उसमें रह सकते हैं।

शाम को जब मेरा भाई वापिस आया तो वह ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाने लगा कहने लगा, "ये क्या है, तुम इन लोगों को नहीं जानती, हो सकता है ये चोर हों, हो सकता है ये कोई काण्ड कर दें।" तब तक मेरे पति आ गए और वे दोनों मिलकर बरसने लगे। सारे पुरुष एक जैसे होते हैं। कहने लगे इन्होंने तीन लोगों को अपने घर में रख लिया है। परमात्मा जाने वे कौन हैं? उनमें से एक मुसलमान है, एक हिन्दु है। परमात्मा जाने उस महिला के दो पति हैं? और इस प्रकार की बातें करने लगे। अगली सुबह वे सब भूल गए। मैंने उनसे कहा कि अच्छा एक रात के लिए तो उन्हें यहाँ रहने दो। आज तो मैं उन्हें यहाँ से नहीं निकाल सकती। अगली सुबह वो सब भूल गए कि कोई वहाँ रह भी रहे हैं। पुरुषों का यही स्वभाव है। पहले तो वो चीखे–चिल्लाए पर मैंने कहा कि अभी अगर जाने को कहूंगी तो उन्हें ठेस पहुँचेगी । एक रात उन्हें यहीं रहने दो। बस इतनी सी बात से वो शान्त हो गए। अगली सुबह वे अपने काम पर चले गए। उनके पास समय ही कहाँ था। सप्ताहान्त के दिन ही पुरुष घर के मामलों में चुस्त होते है। इसके अतिरिक्त घर के मामलों में उनकी कोई भूमिका नहीं होती। ये लोग हमारे घर पर एक महीना ठहरे। इस महिला को नौकरी मिल गई और वह अपने पति और उसके मुस्लिम दोस्त के साथ वहाँ से चली गई।

परन्तु इसी समय में दिल्ली में बहुत बड़ा हिन्दु–मुस्लिम दंगा हुआ। पंजाब में क्योंकि बहुत से हिन्दुओं और सिक्खों को मुसलमानों ने मार दिया था। प्रतिक्रिया के रूप में लोगों ने दिल्ली में भी मुसलमानों की हत्याएं करनी शुरु कर दीं। कुछ सिक्ख और एक दो हिन्दु मेरे घर पर आए और कहने लगे हमें पता

चला है कि आपके यहाँ कोई मुसलमान व्यक्ति रुके हुए हैं। मैंने कहा "मैं ऐसा कैसे कर सकती हूँ?" कहने लगे, नहीं एक मुसलमान आपके यहाँ है हम उसकी हत्या करेंगे।" मैंने कहा देखिए, मैंने कितना बड़ा टीका लगाया हुआ है, क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि मैं किसी मुसलमान को अपने यहाँ स्थान दूंगी? उन्होंने सोचा मैं वास्तव में कोई कट्टर हिन्दू हूँ और उन्होंने मुझ पर विश्वास कर लिया। मैंने उनसे कहा कि यदि आपने घर में घुसने का प्रयत्न किया तो आपको मेरी लाश पर से जाना होगा। तो घबराकर वे वहाँ से चले गए।

इस मुसलिम व्यक्ति ने मेरी बातें सुन ली थीं। मेरे पास आकर कहने लगा कि मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार आपने अपने जीवन को खतरे में डाल दिया। मैंने कहा कुछ नहीं है। उसका जीवन बच गया था। यह मुसलमान महान कवि साहिर लुध्यानवी है और ये महिला महान अभिनेत्री अचला सचदेव हैं। परन्तु बाद में मैंने किसी को कुछ नहीं बताया। मैंने सोचा यदि उन्हें मेरे विषय में पता चलेगा कि मैं बम्बई में हूँ तो वे पागलों की तरह से दौड़ पड़ेंगे।

बच्चों के लिए कुछ अच्छी फिल्में बनाने के लिए हमने एक फिल्म केन्द्र शुरु किया था। उसमें माँ की भूमिका करने के लिए लोग चाहते थे कि अचला सचदेव कार्य करें। मैंने कहा ठीक है मेरे विषय में बिना बताए आप उसके पास जाऐं। ये घटना हुए बारह साल बीत चुके थे। ये लोग उसके पास गए तो वह अभिनेत्रियों की तरह से नाज़ नखरे और मोल–तोल करने लगी। अन्ततः उसने ये भूमिका स्वीकार कर ली और मुहूर्त पर आई। मुझे वहाँ देखकर उसे विश्वास न हुआ। बारह वर्ष पश्चात् उसने मुझे देखा था। उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई, मुँह से एक शब्द न निकला। दौड़ कर वह मेरे गले लग गई। कहने लगी इतने वर्षों तक आप कहाँ थीं। मैंने आपको कितना ढूँढा! साहिर लुध्यानवी भी वहाँ थे, कहने लगे कि ये महिला यहाँ पर कैसे हैं। उन्हें बताया गया कि यह उन्हीं का कार्य है। हे परमात्मा! आप लोगों ने पहले क्यों नहीं बताया। उनके लिए तो हम अपनी जान निछावर कर सकते हैं उनसे हमें कोई पैसा नहीं चाहिए। इस कार्य में सारा धन मैं लगाऊंगी।

अब आप देखें कि मैं एक गृहणी हूँ। अपने पति की सम्पति पर मेरा कोई विशेष अधिकार नहीं है और मेरा भाई और पति दोनो ही रोबीले व्यक्ति उस रात गुस्से में मेरी जान लेने को तैयार हो गए। मैंने उन्हें शान्त किया। अचला सचदेव और साहिर लुध्यानवी कहने लगे कि भविष्य में किसी भी अच्छे कार्य के लिए हम 'नहीं'–नहीं कहेंगे। कहने लगे कि यह गलती हमने आखिरी बार की है। पैसे और कमाई का सारा विचार ही समाप्त हो गया। अचला सचदेव ने बहुत सी परोपकारी फिल्मों में निःशुल्क कार्य किया। दान कार्यों के लिए साहिर लुध्यानवी ने भी बहुत सी कविताएं लिखी।

तो एक महिला पुरुष को दानवीर व्यक्ति बना सकती है क्योंकि वो स्वयं परोपकारी होती है।

उसमें बहुत सौन्दर्य होता है। वह स्वभाव से कलाकार है और गृहस्थी, परिवार तथा समाज में चहुँ ओर सौन्दर्य की सृष्टि कर सकती है। परन्तु अब महिलाएं पुरुषों की तरह से लड़ना चाहती हैं वे अपनी सस्थाएं बनाना चाहती हैं, संघ बनाना चाहती है और अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहती हैं। मैं मानती हूँ कि कुछ पुरुष और कुछ कानून अत्यन्त क्रूर होते हैं। परन्तु ऐसे पुरुषों को सुधारने का यह तरीका नहीं है। महिलाओं को नष्ट करने वाले पुरुषों को सुधारने का एक और तरीका है। **महिलाओं में एक महान गुण है कि गण उनके साथ हैं। श्री गणपति उनके साथ हैं। परन्तु यदि वे पावन न होंगी, अपने शरीर का प्रदर्शन करना चाहेंगी, सौन्दर्य का दिखावा करेंगी और इससे लाभ उठाना चाहेंगी तो गणपति कभी उनका साथ न देंगे।**

अपनी पावनता का सम्मान करने वाली महिलाएं अत्यन्त शक्तिशाली होती हैं और समय पड़ने पर झाँसी की रानी की तरह वे अपना महत्व दिखा देती हैं। झाँसी की रानी सर्वसाधारण गृहणी थीं। वह बर्तानवी सेना से लड़ीं। अंग्रेज जनरल दंग रह गए। उन्होने कहा कि हमने झाँसी पर विजय तो प्राप्त कर ली परन्तु विजय का गौरव झाँसी की रानी को जाता है। ऐसी ही अन्य महिलाएं भी हैं जैसे नूरजहाँ, अहिल्या बाई, पद्मिनी, चाँद बीबी आदि। ये सब महान महिलाएं गृहणियाँ थीं। तो महिलाओं के गुण पृथ्वी माँ की या किसी भी अन्य शक्ति की अन्तःशक्ति (potential) की तरह से है, जैसे विद्युत की अन्तःशक्ति (potential) कहीं और होती है। एक दो बत्तियों के प्रकाश का बहुत ज्यादा महत्व नहीं है। महत्व तो विद्युत की संभावित शक्ति (potential) का है। अतः महिलाओं को समझना है कि हम संभावित शक्तियाँ (potential) हैं। और इस शक्ति को हमने सुरक्षित रखना है। हममें गरिमा, सम्मान एवं धर्मपरायणता का विवेक होना चाहिए।

पुरुषों को चाहिए कि वे ऐसी महिलाओं का सम्मान करें। परन्तु वो भी अत्यन्त मूर्ख हैं, जो महिला उनसे प्रेम करती है, जो पावन है, अच्छी है जो ये चाहती है कि वे सामूहिकता में रहें, जो ये चाहती है वो दानवीर बनें, जो ये इच्छा करती है कि सहजयोग को आगे बढ़ाया जाए, जो ये चाहती है कि पति प्रसन्न एवं आनन्दमय हो और सहजयोग में आए, ऐसी महिला से प्रेम करने की अपेक्षा वे अजीबोगरीब मूर्ख औरतों के पीछे दौड़ते रहते हैं। ऐसी भूतबाधित औरतों के प्रति आकर्षित होने में क्या रखा है? अवश्य उनमें भूत होंगे। ये आकर्षण मेरी समझ में नहीं आता। पुरुषों के इस दुर्व्यवहार के कारण महिलाओं में असुरक्षा की भावना आ जाती है और पुरुष तथा महिलाएं दोनों कष्ट उठाते हैं। अपनी पत्नी का तिरस्कार करने वाले पुरुष को रक्त कैंसर रोग हो सकता है। जो महिलाएं अपने पतियों से इस प्रकार दुर्व्यवहार करती हैं, उनकी उपेक्षा करती हैं, उन्हें अस्थमा, भयानक आतपाघात, (siriasis), मस्तिष्क घात, पक्षाघात, शरीर का पूर्ण निर्जलीकरण (dehydration) हो सकता है। बाईं नाभि बहुत महत्वपूर्ण है।

बाई नाभि को यदि उत्तेजित कर दिया जाए जैसे हर समय दौड़ते रहने से, उछल कूद से, उत्तेजना से– तो उत्तेजित बाई नाभि के कारण रक्त कैंसर हो सकता है। मैंने हमेशा देखा है कि जो महिलाएं पतली हैं उनके पति सदैव घबराए से रहते हैं, क्यों? क्योंकि पत्नि हर समय उन्हें दौड़ाए रखती हैं, यह करो, वह करो, मेरे लिए फलां चीज़ ले आओ; मैंने तुम्हें कोका–कोला लाने के लिए कहा था, तुम वो नहीं लेकर आए आदि–आदि। मानों पुरुष कोई अपराधी हो। ऐसे पुरुष भगोड़े से बने रहते हैं; पुरुष को उसके उछल कूद के कारण कोई न कोई रोग हो जाता है और महिला को उसकी कष्ट देने की प्रवृत्ति के कारण। प्रेम, आनन्द एवं प्रसन्नता का उनमें अभाव रहता है। यह तथाकथित 'शरीर-आकार' का पागलपन अब कम हो रहा है। परमात्मा का शुक्र है कि अब यह अमेरिका से आ रहा है। शरीर-आकार पागलपन मनुष्य को मूर्ख बना देता है। महिलाओं में स्थिरता होनी चाहिए। उन्हें गृहणियाँ होना चाहिए अर्थात जो गृहस्थी में स्थिर हो, अपनी गृहस्थी से सन्तुष्ट हों। महिला यदि हर समय दौड़ी रहेगी, घर में रुकेगी ही नहीं तो वह गृहणी नहीं है। तब वह नौकरानी है। एक कहावत है कि एक महिला नौकरानी थी बाद में वह गृहणी बन गई। परन्तु इधर उधर दोड़ने की उसकी आदत न गई। गृहस्थी में वह स्थिर न हो सकी। गृहस्थी किसके लिए है? उसके पति के लिए नहीं है, केवल बच्चों के लिए नहीं है, गृहस्थी तो अन्य लोगों के स्वागत के लिए है, बिल्कुल वैसे ही जैसे पृथ्वी माँ ने आपका स्वागत करने के लिए और आपको आनन्द प्रदान करने के लिए इतना कुछ सुन्दर फैलाया हुआ है।

सहजयोग में एक अन्य बहुत आम चीज़ है, पति–पत्नी एक दूसरे में मस्त हो जाते हैं और सहजयोग खो देते हैं। तब उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है, उनके बच्चे जिद्दी और अवज्ञाकारी बन जाते हैं। उन्हें शारीरिक समस्यांएं भी हो जाती हैं। **यह दण्ड है। ऐसा नहीं है कि मैं दण्ड देती हूँ, आपका अपना स्वभाव ही आपको दण्डित करता है। अपना हाथ यदि आप आग में डालेंगे तो जलेगा ही। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि आप स्वयं ही स्वयं को दण्डित करते हैं।** आपके बच्चे बिगड़ जाते हैं। केवल खाने और गृहस्थी के लिए यदि यह स्वार्थ आपमें प्रवेश कर जाता है तो परमात्मा ही ऐसे परिवार की रक्षा कर सकता है। स्त्रियों में इस प्रकार का स्वार्थ कुछ सीमा तक चल सकता है, परन्तु पुरुष यदि इस प्रकार से स्वार्थी हो जाए तो परमात्मा ही रक्षक है। **हमारा परिवार किसी एक पुरुष या महिला तक सीमित नहीं है, पूरा ब्रह्माण्ड हमारा परिवार है। हम अकेले नहीं हैं। आप यदि स्वेच्छाचारी हो जाते हैं और अपने को अलग कर लेते हैं तो, आज मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि, ऐसे लोगों को भयानक रोग हो जाएंगे। तब सहजयोग को दोष न दें। सहजयोग का अपना ही एक बहुत सुन्दर संसार है जो परमात्मा का साम्राज्य है। इस साम्राज्य में आपको सामूहिक होना पड़ेगा।** परन्तु मूर्ख पत्नी समस्याएं खड़ी करती है।

वह लोगों के, महिलाओं के झुण्ड बनाती है और अपने भूत दूसरों को लगाती है। हो सकता है उसे अपनी पढ़ाई–लिखाई, पद और धन आदि का बहुत गर्व हो। ऐसे में वह अपने पति को सामूहिकता से पृथक करके रेखेगी। ऐसे लोगों को अपने किए का दण्ड भुगतना होगा। यह दैवी दण्ड होगा।

अतः सहजयोग में गृहलक्ष्मी तत्व बहुत महत्वपूर्ण है। सहजयोग में आने के पश्चात् जिन लोगों को समस्याएं आई हैं, उनमें से अधिकतर ने गृहलक्ष्मी तत्व की उपेक्षा की है। क्योंकि यदि गृहलक्ष्मी चली जाए तो मध्य हृदय पकड़ता है। जो महिलाएं ऐसा करती हैं उन्हें चाहिए कि तुरन्त इसे छोड़ दें क्योंकि ऐसा करना अत्यन्त अपमान–जनक है। कोई भी ऐसी महिला का सम्मान नहीं करता। अगुआओं तथा उनकी पत्नियों के विषय में तो यह बात पूर्णतया सत्य है। अगुआ या उनकी पत्नी होना सहजयोग में तुच्छतम पद है। आपको जो प्राप्त हो गया है वह इससे कहीं ऊँचा है। किसी सन्त को यदि आप राजा बनने के लिए कहें तो वह कहेगा कि क्या आप सागर को प्याले में भरना चाहते हैं? तो अगुआ का पद सहजयोग में तुच्छतम है। अपने जीवन को सेवा के लिए समर्पित बताने वाले लोग भी मूर्ख हैं। उनका जीवन आनन्द है सेवा नहीं क्योंकि वह सेवा अपने आप आनन्द है। परन्तु यदि आप स्वयं को सेवक समझते रहे, 'ओह! मैं बलिदान कर रहा हूँ, यह मेरी तपस्या है, तो बस समाप्त हो गया। तब एक तपस्वी के रूप में ही आपका अन्त होता है। ऐसे लोग क्रूस पर उपयोग किए जाने के योग्य रह जाते हैं। तो सहजयोग में आपके लिए आनन्द है। परन्तु जब तक आप हर चीज़ में से आनन्द का सार नहीं लेते, यदि आप गन्ने में से मिठास निकाल दें तो शेष क्या रह जाता है। इसी प्रकार इस तथाकथित सेवा और तपस्या में कोई मिठास नहीं है। इस सबका सार तो माधुर्य है जिसकी सृष्टि महिलाएं कर सकती हैं। परन्तु महिलाएं तो बहुत कठोर हैं। इसे खराब मत करो उसे ठीक से रखो। पति घर में ऐसे घुसता है मानो अपराधी हो। उसे बहुत सावधान रहना पड़ता है। एक प्रकार से तो यह अच्छी बात है, और यदि पुरुष इन चीज़ों के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ है तो और भी अच्छा है। परन्तु हर समय उसे दास बनाए रखना, ऐसा करो, वैसा करो – यह गृहणी का कार्य नहीं है। जिस प्रकार पृथ्वी माँ करती है वैसे ही गृहणी को करना चाहिए। पृथ्वी माँ कभी शिकायत नहीं करती और हमें हमारी आवश्यकता के लिए इतना कुछ प्रदान करती हैं। वे इतनी गरिमा मय हैं और उनमें इतनी शक्ति है कि कोई उन्हें क्या देता है इस बात की उन्हें कोई चिन्ता नहीं। मैं यदि आपको ये बताऊं कि मैंने आज तक अपने पति से कुछ भी नहीं माँगा तो आप हैरान होंगे। पहली बार मैंने उनसे एक कैमरा लाकर देने के लिए कहा था। शाम को ही आपने उसका परिणाम देखा कि उन्होंने क्या कहा। उन्होंने जो कहा उसे सोचा भी न जा सकता था। वे हमेशा मुझसे कहते थे कि तुम बताओ तुम्हें क्या चाहिए पहली बार मैंने कुछ कहा और इसका परिणाम आप देखें।

महिला को आत्मसन्तुष्ट होना चाहिए, अपने आपमें संन्तुष्ट क्योंकि उसे तो सदैव देना होता है। देने वाला व्यक्ति किस प्रकार माँग सकता है? उसे प्रेम देना होता है क्योंकि वह साक्षात् प्रेम है। उसे सभी सेवाएं देनी होती हैं, उसे अपनी सम्पति देनी होती है, उसे शान्ति देनी होती है। कितनी महान जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री या किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक जिम्मेदारी एक गृहणी की है और उसे इस बात का गर्व होना चाहिए। सहजयोग के अगुआ से भी कहीं अधिक जिम्मेदारी एक गृहणी की है। परन्तु अगुआओं की पत्नियाँ भयानक हो सकती हैं क्योंकि वे स्वयं को अगुआ मान बैठती हैं। उनका व्यवहार इतना हास्यप्रद हो जाता है कि मुझे हैरानी होती है।

मेरा विवाह एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसमें सौ सदस्य थे। सभी मुझे बहुत प्रेम करते हैं। मैं कभी यदि लखनऊ चली जाऊं तो वे सब मुझे मिलने आते हैं, परन्तु मेरे पति यदि वहाँ जाएं तो कोई नहीं आता। मेरे पति को इस बात की बहुत शिकायत है। वे उनके संबंधी हैं परन्तु मुझे मिलने आते हैं, उन्हें नहीं। मैंने यदि उन्हें प्रेम न दिया होता या उनकी ज़रुरतें पूरी न की होतीं तो वे मेरे पास न आते। तो अगुआओं की पत्नियों को दूसरे लोगों के लिए चीज़ें संभालनी चाहिए, अपने लिए नहीं। हमारे यहाँ बहुत सी मूर्ख महिलाएं हैं हिन्दी में हम उन्हें बुद्धु कहते हैं क्योंकि उन्हें अपनी शक्तियों की समझ नहीं है। वे नहीं जानती कि उनकी जिम्मेदारियाँ क्या हैं? मैं उनके सम्मुख उदाहरण हूँ। मेरे लिए एक बहुत बड़ी समस्या है। सहजयोग में ६० प्रतिशत अगुआओं की पत्नियाँ भयानक हैं और सहजयोग इसी प्रकार चल रहा है। वे आश्रमों में नहीं रह सकती, अपना खाना नहीं बना सकतीं। पति को देखना पड़ता है कि उन्होंने खाना खाया कि नहीं। वास्तव में ये पत्नियों का कर्तव्य है कि वे सबको खिलाएं और सबकी देखभाल करें, तब स्वयं खाएं, देखें कि सबको बिस्तर मिला है कि नहीं सब लोग आराम से हैं या नहीं। परन्तु वे तो मिनी माताजी बन बैठती हैं और कहती हैं मेरे लिए ये ले आओ, मेरे लिए वो ले आओ। उनमें से अधिकतर को तो खाना बनाना ही नहीं आता। हर अगुआ की पत्नी को खाना बनाना सीखना होगा। अब यह आवश्यक है। उन्हें हृदय से खाना बनाना होगा और प्रेम से लोगों को खिलाना होगा। अन्नपूर्णा के लिए यह कम से कम है। पति को भी चाहिए कि उनके दोष न निकाले। आरम्भ में हो सकता है वे गलतियाँ करें। उनके गुणों और अच्छाई को प्रोत्साहित करें। कुछ बहुत अच्छी महिलाएं भी देखी हैं जो सहजयोग में बहुत ही क्रियाशील होती हैं परन्तु विवाह के बाद वे खो जाती हैं। उनके पति भी खो जाते हैं। जब मैं साक्षात् में होती हूँ तभी वो लोग नज़र आ जाते हैं। आज मुझे बताया जा रहा था कि ऐसे बहुत से लोग हैं। इसका अर्थ ये हुआ कि पतियों में खराबी है। विवाह से पूर्व तो वे ठीक ठाक थे।

तो हमारे अन्दर गृहलक्ष्मी तत्व कितना महत्वपूर्ण है, सामूहिकता के लिए और आन्तरिक सामूहिकता का आनन्द लेने के लिए। कल

मैंने आपको बताया था कि मैं आपको रागों के विषय में बताऊँगी। 'रा' का अर्थ होता है शक्ति और 'ग' शब्द का अर्थ है जो हमारे अन्दर प्रवेश कर जाए। यह आकाश तत्व का गुण है। आकाश तत्व में यदि कोई शब्द आप डाल दें तो इसे ब्रह्माण्ड के किसी कोने में भी पकड़ सकते हैं। तो राग वह शक्ति है जो आकाश तत्व में प्रवेश कर जाती है अर्थात् आपकी आत्मा ही राग है। मैं कहूँगी कि ये राग गृहणी की तरह से हैं। आप यदि सेना के बाजे के पास खड़े हो जाऐं तो बायाँदायाँ करते हुए आप थोड़ी देर में परेशान हो जाएंगे। परन्तु एक मधुर राग स्वतः ही सौन्दर्य की ओर इशारा करता है वैसे ही जिस प्रकार एक गृहणी घर को सजाती है। सभी को शान्त करती है, उन्हें खुश करती है; सबकी देखभाल करती है। सब जानते हैं कि वह वहाँ उपस्थित है।

आधुनिक शैली में मान लो आप किसी को घर पर अपने बच्चे के ज़न्मदिवस केक काटने के लिए निमन्त्रित करते हैं परन्तु उनके आने से पहले ही केक काट लेते हैं, तो कैसा लगेगा? गृहणियाँ भी यदि अपना महत्व दर्शाती रहें तो ऐसा ही लगता है। उन्हें तो सदैव सबसे पीछे रहना चाहिए क्योंकि उन्होंने सबकी देखभाल करनी होती है। राग भी यही चीज़ है, यह आपको सभी कोणों से प्रसन्न करता है। मान लो दफ्तर से चिन्तित और परेशान व्यक्ति घर आकर राग बजाने लगता है। राग उसे शान्त कर देता है, स्थिर कर देता है। छः दिन तक लोग अपने घरों में ऐसे रहते हैं मानो टैंट में रह रहे हों और सातवें दिन दौड़कर समुद्र पर चले जाते हैं और होटलों में रहते हैं। कोई भी अपने घर में नहीं रहना चाहता । इसका कारण ये है कि पति–पत्नी में गृहलक्ष्मी तत्व का अभाव है। परन्तु राग का आनन्द लेने के लिए लम्बी बैठक की आवश्यकता है। बैठक के बिना राग का आनन्द नहीं लिया जा सकता। कूदते हुए राग सुनने वाले व्यक्ति की कल्पना आप करें! व्यक्ति को स्थिर होना होगा। यही स्थिरता गृहणी का संसार है। पुरुष को गतिशील होते हुए भी स्थिर होना होगा। मैंने आपको बहुत बार बताया कि आधुनिक युग में आपकी बाई नाभि बहुत पकड़ी रहती है। ऐसी अशान्त महिलाओं के बच्चे भी होते हैं। भारत में प्रायः पति के जागने से पूर्व जागकर पत्नियाँ स्नान आदि से निवृत्त हो जाती थीं। पत्नियाँ सदैव पति के साथ नहीं बनी रहती थीं। वे उसके लिए खाना बनातीं, बच्चों की देखभाल करतीं। हर समय पति के साथ बने रहना भी बहुत ही उबाऊ है। पति पत्नी दानों ही उब जाते हैं और तब तलाक ले लेते हैं। गृहणी के और भी शौक होने चाहिए जैसे बच्चों की देखभाल करना, सहजयोग आदि–आदि। स्नान आदि करके पति बाहर आता है। भारत में पहले लोग खाना खाने के लिए पृथ्वी पर बैठा करते थे परन्तु आज कल कुर्सी पर बैठते हैं। पति जब आकर बैठे तो उसे ये नहीं कहना चाहिए कि तुमने फलाँ काम नहीं किया या फलाँ महिला झगड रही थी, या एक महिला मुझे बता रही थी कि तुम ऐसे हो। ऐसा नहीं करना चाहिए। उसे शान्ति से खाना खाने दें। भारत

में यदि पति को गुस्सा आया हुआ हो तो वह घर पर खाना नहीं खाता। खाना न खाकर वह अपने क्रोध का प्रदर्शन करता है। क्रोध प्रदर्शन के लिए पति अपने अंग वस्त्र भी स्वयं धोने लगते हैं। भारत में पति जब खाने के लिए बैठता है तो पत्नी उसे पंखा झलते हुए बच्चों की मधुर बातें बताती है, अपनी सास के स्वास्थ्य के विषय में बताती है, कहती है कि आपकी बहन आ रही है तो उसके लिए एक साड़ी खरीदनी है। पत्नी पति को ऐसी अच्छी अच्छी बातें कहती है। शान्ति पूर्वक पति खाना खाता है और अपने कार्य के लिए चल पड़ता है। **आजकल क्योंकि जीवन में तेजी आ गई है, आपको तेजी से चलना पड़ता है। पहिए की परिधि पर यद्यपि तेजी होती है परन्तु धुरा बिल्कुल शान्त होता है। सहजयोगियों को भी सदैव धुरे पर बना रहना होता है। पति पत्नी, रथ के बाएं और दाएं पहियों को भी, सदैव धुरे पर बने रहना है? बायाँ, बायाँ है दायाँ दायाँ।**

महिलाएं तैयार होने में पुरुषों से अधिक समय लेती हैं; मैं नहीं लेती, मैं सदा अपने पति से कम समय लेती हूँ। तैयारी में देर करना महिलाओं की आदत है, इसे स्वीकार करें। महिलाएँ महिलाएं रहेगीं, पुरुष पुरुष। पुरुष दस बार अपनी घड़ी देखेंगे परन्तु महिला कभी एक बार देख लेगी तो देख ले। प्रायः उनकी घड़ियाँ या तो बन्द होती है या खो जाती हैं। यदि वे सच्ची महिलाएं हैं तो पुरुषों की तरह से उछलू नहीं होंगी। वे भिन्न होती हैं। वे महिलाएं हैं और आप पुरुष। परमात्मा ने पुरुषों को पुरुष और महिलाओं को महिला बनाया है। उन्हें यदि एक लिंग बनाना होता तो एक लिंग बनाते। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। अतः व्यक्ति को शान्त, सौन्दर्य एवं गरिमा पूर्वक अपना लिंग स्वीकार करना चाहिए। मेरा विवाह एक पुराने रीति–रिवाज के परिवार में हुआ जहाँ घूँघट की प्रथा थी। वहाँ के कलेक्टर, जो कि मेरे पति के मित्र थे, ने मेरे जेठ से कहा कि क्या मेरे मित्र की पत्नी हमें मिलने नहीं आ सकती? उन्होंने कहा क्यों नहीं। मेरे लिए चीज़ों को आसान करने के लिए मेरे जेठ छुट्टी लेकर शहर से बाहर चले गए और जाते हुए अपनी पत्नी से कह गए कि इन्हें कलेक्टर से मिलने के लिए भेज देना। कितनी सुन्दर शैली थी उनकी। मुझे कभी नहीं लगा कि मुझे दबाया जा रहा है। उनके परिवार का यही तरीका था। परन्तु इसके लिए भी विवेक की आवश्यकता होती है। पति यदि मूर्ख होगा तो वह पत्नी को अपमानित करवा लेगा और पत्नी यदि मूर्ख होगी तो पति अपमानित होगा। महिला यदि बहुत चुस्त है, तेज तर्रार है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह विवेक शील है। **मैं उसी व्यक्ति को विवेकशील मानती हूँ जो हित, उत्थान और अन्तिम लक्ष्य को देखता है। वही व्यक्ति संवेदनशील और विवेकशील है। शेष सारी बुद्धिमता अविद्या है और व्यर्थ है**

इस विषय पर मुझे लगता है कि मैं एक ग्रन्थ लिख सकती हूँ। तो इसे ग्रन्थ के लिए छोड़कर हमें पूजा करनी चाहिए।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सार्वजनिक कार्यक्रम, मुम्बई 1998

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम। सत्य जिसे हम सत्य के रूप में समझते हैं उसे हम अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर जानते हैं और जो भी कुछ हम देखते हैं, जो भी कुछ सुनते हैं, जो भी कुछ सूँघते हैं हम कहते हैं कि ये सत्य है। हम केवल इतना ही जानते हैं। परन्तु सत्य इससे कहीं अधिक है। यह ज्ञानेन्द्रियों से कहीं अधिक है आपके मानसिक प्रयोजनों से कहीं अधिक है और आपकी कल्पना से बहुत अधिक ऊँचा है।

हमारे शास्त्रों तथा महान धर्म ग्रन्थों में कहा गया है कि परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति है जो मानव की देखभाल करती है, जिसने मानव की सृष्टि की है, जिसने इस पूर्ण सुन्दर ब्रह्माण्ड की छोटी–छोटी चीज़ों पर नजर रखी है, ज़र्रे–ज़र्रे की देखभाल की है और उसे ठीक प्रकार से नियोजित किया है। कहा गया है कि एक शक्ति विद्यमान है परन्तु इसके विषय में मानव अनभिज्ञ है। एक दिन मानव को इसके विषय में चेतन होना पड़ेगा। सभी अवतरणों और महान पैगम्बरों ने कहा है कि इस चेतनावस्था को पाने के लिए पुनर्जन्म लेना होगा, आपको आत्म–साक्षात्कार (self realisation) प्राप्त करना होगा। जो भी नाम आप इसे दें। परन्तु जिन लोगों ने भी सत्य के आध्यात्मिक सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने पुनर्जन्म के विषय में बात की है। परन्तु आज हम पाते हैं कि आपके उत्थान और आत्मसाक्षात्कार के सिद्धांतों को प्रस्तुत करने के लिए स्थापित किए गए धर्म क्रूरता, राक्षसी प्रवृत्ति या मूर्खता के बहुत समीप हैं। यह समझ पाना असम्भव है कि पृथ्वी पर प्रकटे महान अवतरणों ने, जिन्होंने इतनी सुन्दर वस्तुओं की सृष्टि की, जीवन के मूल सत्य के विषय में बताया और वचन दिया कि आप सबको परमात्मा की इस सर्वव्यापी शक्ति–ब्रह्म चैतन्य को एक दिन महसूस करना होगा– किस प्रकार लोगों को ऐसा बनने के लिए कह सकते थे! सभी धर्मों के अनुयायी अति की सीमा तक जा रहे हैं और सभी प्रकार के लड़ाई झगड़े और मूर्खता कर रहे हैं।

मानवीय चेतना केवल बाएं या दाएं को जा सकती है। सहजयोग में हम कह सकते हैं कि हमारी चेतना 'ईड़ा' या 'पिंगला' की ओर जा सकती है। अनुकम्पीनाड़ी-प्रणाली (sympethetic nervous system) के ये दो मार्ग हैं जो बाईं तरफ (भूतकाल में) और दायी तरफ (भविष्य में) हमारे प्रयत्नों को देखते हैं। बाईं ओर आसक्ति होगी। कुछ धर्म ऐसे भी हैं जो आपको इच्छानुसार कार्य करने की आज्ञा

देते हैं। उदाहरण के रूप में इसाईधर्म में कैथोलिक मत चालू किया गया। यह आक्रामक प्रकार का धर्म था क्योंकि इसमे बहुत अधिक पाबन्दियाँ थीं। इसमें सन्यासिनियाँ (nuns) और पादरी होते हैं जिनसे आशा की जाती है कि वे विवाह न करें, तलाक न करें, तथा अन्य बहुत प्रकार के नियम, बन्धन तथा पाबन्दियों की आशा इनसे की जाती है। तब मार्टिन लूथर ने एक आन्दोलन आरम्भ किया। वह दाईं ओर का (आक्रामक प्रवृत्ति) व्यक्ति था। इन्होंने लोगों को बताया कि परमात्मा ने यह सब करने के लिए नहीं कहा है। हमें बहुत सी स्वतन्त्रता होनी चाहिए और इस प्रकार का अनुशासन और अन्धानुकरण ठीक नहीं है। हम इस पोप का अनुसरण नहीं करेंगे जो स्वयं सभी प्रकार के अधार्मिक कार्यों में लिप्त है।

इसी प्रकार भारत में हिन्दू धर्म दो चीज़ों पर आधारित है। वाम मार्गी लोग कहते हैं कि धर्म में हर चीज़ की आज्ञा है। हम जो चाहे कर सकते हैं। मदिरापान करने में कोई बुराई नहीं और न ही वेश्यावृति में कोई बुराई। ये लोग यहाँ तक कहते हैं कि समुद्र मन्थन में से ही वेश्याएँ प्रकट हुई। इसलिए वेश्यावृति उचित है। इन्होंने दूसरे प्रकार के धर्म अपना लिए जो आज भी हमारे मन्दिरों में चल रहे हैं। मैंने यह देखा है। ये लोग भूत विद्या, प्रेत विद्या, श्मशान विद्या को मानने लगे। अब भी बम्बई के मन्दिरों में लोग भूत बाधित औरतों के पास जाते हैं जो उन्हें दौड़ के घोड़ों के नम्बर बताती हैं। परमात्मा का घोड़ों तथा दौड़ों से कोई लेना देना नहीं। परन्तु अब भी ये चीज़ें हो रही हैं और लोग परमात्मा के कार्य में हस्तक्षेप करने में लगे हुए हैं। यह तो परमात्मा विरोधी कार्य है और यही कारण है कि जब हम धर्म के नाम पर ये कार्य होते हुए देखते हैं तो, जिस प्रकार हमारे देश में किया जाता है, महिलाओं से दुर्व्यवहार करते हैं। इसी–प्रकार भारत में लोगों ने सती प्रथा आरम्भ की। हाल ही में मुझे बताया गया कि सती होना महिला का धर्म है, ऐसा शास्त्रों में लिखा हुआ है परन्तु महिलाओं को शास्त्र पढ़ने का अधिकार नहीं है। ये सब मूर्खता है पूर्ण मूर्खता।

आठ हजार वर्ष पूर्व जब श्री राम ने रावण का वध किया तो उन्होंने उसकी पत्नी का विवाह विभीषण से कर दिया। आठ हज़ार वर्ष पूर्व उन्होंने एक विधवा का विवाह विभीषण से किया। श्री राम का उदाहरण हमारे सामने है कि उन्होंने जाति प्रथा की बिल्कुल चिन्ता नहीं की। आज हम लोग श्री राम में दोष सोच रहे हैं क्योंकि हम इतने अहंकारी हो गए हैं कि हमें यह समझ भी नहीं रही कि श्री राम कितने महान थे। अब तो लोग ये भी कहने लगे हैं कि श्री राम ने अपनी पत्नी को दुत्कार दिया और उनसे दुर्व्यवहार किया। यह सब तो नाटक था। उन्हें उस समय यह सारा नाटक करना पड़ा ताकि लोगों को दर्शा सकें कि सुक्रान्त वर्णित 'हितकारी राजा' क्या होता है। ऐसा व्यक्तित्व आप श्री राम में देख सकते हैं पश्चिम में श्री राम सम श्रेष्ठ व्यक्ति कोई नहीं हुआ । भारत में अपनी तुच्छ बुद्धि से अब हम श्री राम के दोष खोजने में लगे हुए हैं।

पृथ्वी पर अवतरित होकर श्री राम ने पहला कार्य जो किया वह था एक शूद्र को रामायण लिखने का अवसर प्रदान किया। वाल्मिकी एक सर्वसाधारण मछुआरे थे। उन्होंने रामायण लिखी। इससे प्रमाणित होता है कि **श्री राम संसार को ये दिखाना चाहते थे कि जो व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेता है वही वास्तव में विद्वान है, वही सच्चा पंडित है, सच्चा ब्राह्मण है। स्वयं को पण्डित था ब्राह्मण कहने वाले लोग ब्राह्मण नहीं हैं।**

लोग श्री कृष्ण के बारे में भी उल्टी सीधी बातें करते हैं, मानो उनकी जिह्वा बेकाबू हो गई हो। मेरी समझ में नहीं आता कि इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण बातें करने की हिम्मत और दुस्साहस लोग कैसे करते हैं! महान अवतरणों के विषय में ऐसी बातें करते हुए उन्हें परमात्मा का भी भय नहीं होता। श्री कृष्ण के विषय में भी आजकल लोगों ने कहना शुरु कर दिया है कि उनकी बहुत सी पत्नियाँ थीं और वे अत्यन्त स्वेच्छाचारी व्यक्ति थे। श्री कृष्ण के विषय में यह सब कहना बहुत बड़ा दुस्साहस है। श्री राम और श्री कृष्ण महान अवतरण थे। धर्म की स्थापना के लिए साक्षात् श्री विष्णु उनके रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए। श्री राम का जीवन महान तपस्विता का था और अत्यन्त गम्भीर था। उसे देखते हुए लोग भी अत्यन्त तपस्वी एवं गम्भीर होने लगे। श्री कृष्ण ने धार्मिक जीवन को उचित मार्ग तथा उचित विकासशील अवस्था प्रदान करनी चाही। उन्होंने कहा कि यह सब लीला है। जीवन को सहज तथा जीवन्त बनाने के लिए ताकि लोग स्वयं को न तो कष्ट दें और न ही पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए व्यथित हों, उन्हें बहुत से कार्य करने पड़े। श्री राम ने हमारे लिए बहुत कष्ट उठाए। अब हमें और कष्ट उठाने की कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने हमारे लिए कष्ट उठाए फिर भी उन्होंने कभी कष्ट नहीं उठाए। यह सब मात्र नाटक है, वे हमारे लिए नाटक करते हैं। अन्तर्दृष्टि विहीन लोग श्री कृष्ण के जीवन के विषय में कुछ भी कह सकते हैं क्योंकि उनमें गहनता का पूर्ण अभाव है। वे इस प्रकार श्री कृष्ण की आलोचना करने लगते हैं मानों श्री कृष्ण उनकी जेब में रखे हुए हों। इतने महान अवतार की आलोचना, उनके विषय में इतना कुछ कहा जाना वास्तव में आश्चर्यजनक है। वे मानव रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए और आप जानते हैं कि पृथ्वी पर मानव जीवन कैसा होता है। मेरे बहुत से सहजयोगी बच्चे हैं मैं उन्हें अपने बच्चे कहती हूँ। परन्तु कोई पुरुष यदि ये कहे कि यह मेरा बच्चा है या यह मेरी बेटी है तो कोई इस बात को स्वीकार नहीं करेगा।

श्री कृष्ण चाहते थे कि उनकी सभी शक्तियाँ पृथ्वी पर अवतरित हों, उनकी सोलह हजार शक्तियाँ हैं। उन्हीं की तरह से सहजयोग में आप जान जाएंगे कि आपकी भी सोलह हजार शक्तियाँ हैं। विशुद्धि चक्र में जहाँ उनका निवास है, सोलह पंखुड़ियाँ हैं। इन सोलह पंखुड़ियों को मस्तिष्क की एक हजार नाड़ियों (पंखुड़ियों) से गुणा की जाए तो ये श्री कृष्ण की सोलह हजार शक्तियाँ बन जाती हैं। परन्तु श्री कृष्ण उस समय इन शक्तियों को

सहजयोगियों के रूप में न पा सके थे, इसलिए उन्हें उन शक्तियों को महिलाओं के रूप में पृथ्वी पर लाना पड़ा। इन सबको एक राजा से विवाह करना पड़ा। तत्पश्चात् उस राजा को पराजित करके श्री कृष्ण ने उन सबसे विवाह किया। वे सब उनकी शक्तियाँ थीं। इसके अतिरिक्त उनकी पाँच पत्नियाँ थीं, ये पंच तत्व थे, जिन्हें शक्तियों के रूप में उन्हें अपने समीप रखना था। जो लोग श्री कृष्ण के महान अवतरण को नहीं समझ पाते वे व्यर्थ की आलोचना करने लगते हैं। यहाँ तक कहा जा रहा है कि गोकुल और वृन्दावन में क्रीड़ा करने वाले कोई और थे और गीता लिखने वाले श्री कृष्ण कोई और। इन बुद्धिवादी लोगों का मस्तिष्क घूम गया है। मैं सोचती हूँ कि उनकी बुद्धि को इन महान अवतरणों की कुछ अधिक समझ की आवश्यकता है जो आपकी चेतना को सुधारने और विकास–प्रक्रिया में आपको सही दिशा देने के लिए पृथ्वी पर आए।

केवल यही दो बातें नहीं हैं जिनके कारण लोगों ने अपराध किए। ईसामसीह को भी नहीं बख्शा गया। चर्चों ने उन्हें भी पूरी तरह गलत ढंग से पेश किया। इस बात को अब आसानी से देखा जा सकता है क्योंकि सेंट थाम्स ने एक पुस्तक लिखी थी। जब वे भारत आ रहे थे तो यह पुस्तक उनसे मिश्र में छूट गई। लोगों ने जब इस पुस्तक को देखा तो वे दंग रह गए। अड़तालीस वर्ष पूर्व ये पुस्तक खोज ली गई और जब इसे अंग्रेजी भाषा में पढ़ने योग्य बनाने का प्रयत्न किया गया तो लोग यह जान कर आश्चर्य चकित हो गए कि इसाईयों द्वारा चलाए जा रहे सभी नियम ईसा विरोधी हैं। सर्वप्रथम सेंट थाम्स ने कहा था कि आपको आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति होना होगा, यह अनुभव आपको प्राप्त करना होगा। केवल इतना ही नहीं, जिस प्रकार से ये ईसाई धर्म की शिक्षा देते हैं, कि आपके लिए कष्ट उठाना आवश्यक है तथा ईसामसीह का क्रूस आपको उठाना होगा, यह सब मूर्खता है। ईसामसीह ने आप लोगों के लिए क्रूस उठाया अब हमें कोई अन्य क्रूस उठाने की आवश्यकता नहीं है। क्या उन्होंने कुछ अधूरा छोड़ा है जिसे हमने पूरा करना है? ईसा मसीह ने कहा है कि आपको प्रसन्नचित्त होकर यह समझना है कि आपके पिता सर्वशक्तिमान परमात्मा, आपको प्रेम करते हैं और वे नहीं चाहते कि आप किसी प्रकार का कष्ट उठाएं और गलियों में चिल्लाते हुए चलें कि आप दुखी हैं। इसके विपरीत यदि आप इसाई मत का अनुसरण करने वालों को देखें तो आप जान जाएंगे कि इसाईयों के हाथों सभी लोगों को कष्ट उठाने पड़े। अभी तक इसाईयों को कभी कष्टों का सामना नहीं करना पड़ा। वे कहते हैं कि हम कष्ट उठा रहे हैं, परन्तु यह एक बहुत बड़ा नाटक चल रहा है। 'हम कष्ट उठा रहे हैं, हमें कष्ट उठाने चाहिएं।'

हिन्दु धर्म में भी ऐसे लोगों का एक अन्य वर्ग है। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहती, आप उन्हें भली–भाँति जानते हैं जिन्होंने आपको यह समझाने का प्रयास किया कि आप तपस्विता का जीवन व्यतीत करें। जैन धर्म में भी यह

मूर्खता चल रही है। किसी भी शास्त्र में ये नहीं कहा गया कि आप अति में जाएं या व्यर्थ में भूखों मरें। हमारे देश में लोग भूखों मर रहे हैं। भूखों मरने वाले ये लोग क्या स्वर्ग में जा रहे हैं? भूखे रह कर क्या आप भूखमरी में फँसे लोगों की सहायता कर सकते हैं। व्रत करके भूखों मरने की इस क्रिया को इतने गलत ढंग से लोगों को समझाया गया है कि श्री गणेश के जन्म दिवस पर भी वे व्रत रखते हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि आपके परिवार में यदि किसी बच्चे का जन्म होता है तो आप जश्न करते हैं। उस दिन व्रत करके आपको भूखा रहना चाहिए या अपने परिवार में जन्मे श्री गणेश के स्वागत में लड्डू बाँटकर खुशियाँ मनानी चाहिए? श्री राम जन्म दिवस है तो आपको व्रत करना होगा, श्री कृष्ण जन्म दिवस है तो आपको व्रत करना होगा! हैरानी की बात है कि किस प्रकार लोगों ने इतने गलत ढंग से इन महान अवतरणों की व्याख्या की।

एक और नई चीज़ मैंने देखी है। इंग्लैण्ड में यह देखकर मैं हैरान हो गई कि परिवार में यदि किसी की मृत्यु हो जाए तो वे शैम्पेन पिएंगे, ईसामसीह का जन्मदिन है तो वे शैम्पेन पिएंगे, कोई अन्य शुभ दिन है तो वे शैम्पेन पीएंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि इसाई–धर्म कहलाने वाला यह कैसा असभ्य धर्म है! यही बात अन्य धर्मों के विषय में भी है। अब आप देखें कि सिख लोग खालिस्तान शुरु कर रहे हैं। खालिस अर्थात निर्मल–शुद्ध। हमने यहाँ एक खालिस्तान शुरु किया है वे वहाँ क्या कर रहे हैं? इतनी गन्दगी मस्तिष्क में भर के, पंजाब को लेने के लिए इतनी मूर्खतापूर्ण बातें करके किस प्रकार का खालिस्तान वो देना चाह रहे हैं? क्या गुरु नानक ने यही बताया था? गुरुनानक ने कहा था, "कह नानक बिन आपा चीन्हें मिटे न भ्रम की काई।" कबीर साहब ने भी यही बात कही। मोहम्मद साहब ने कहा कि क़यामा के समय– पुर्न-उत्थान के समय आपके हाथ बोलेंगे। और ये मुसलमान कहाँ जा रहे हैं? ये क्या कर रहे हैं, एक दूसरे का गला काट रहे हैं? क्या यही धर्म है? क्या यही परमात्मा का मार्ग है? यह परमात्मा का मार्ग नहीं है। परन्तु ऐसा क्यों घटित हुआ? क्योंकि मानवीय चेतना बाएं और दाएं की सीमाओं को लाँघ जाती है। परमात्मा का धन्यवाद है कि ऐसा हुआ क्योंकि अब इसके कारण इन महान अवतरणों के नाम पर बनाए गए तथाकथित धर्मों की मूर्खता और असंगति को अब आप लोग समझ सकते हैं।

सहजयोग आपका अपना धर्म है। आपके अन्तर्निहित कुण्डलिनी आपके अन्दर है। ये शक्ति आपके अन्दर है, इसका जागृत होना आवश्यक है। इसकी जागृति के विषय में सेन्ट थाम्स, मोहम्मद साहब, ज़ोरास्टर, ईसामसीह और श्री कृष्ण ने भी कहा। परन्तु ज्ञानेश्वर जी ने कुण्डलिनी जागृति के विषय में स्पष्ट बात की, नानक साहब ने भी इसके विषय में बताया। सभी ने कुण्डलिनी के विषय में बताया कि यह महान शक्ति है। इसका आपके अन्दर जागृत होना आवश्यक है ताकि आपको आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हो सके। कोई भी उत्थानाकाँक्षी नहीं है। सभी लोग किसी न किसी प्रकार से

धन एवं सत्ता व्यापार कर रहे हैं और इस लोलुपता में धर्म के नाम पर वे एक दूसरे की हत्या कर रहे हैं। धर्म के नाम पर वे दूसरों पर शासन करने का प्रयत्न करते हैं। ये धर्म नहीं है। अवतरणों का इससे कुछ लेना–देना नहीं है। ऐसे लोग परमात्मा विरोधी हैं और परमात्मा के नाम को बदनाम कर रहे हैं। ऐसे बहुत से गुरु है, ये झूठ–मूठ के गुरु, जो धन एकत्र करने के लिए सभी प्रकार का असत्य सिखा रहे हैं। परमात्मा के सन्त आपसे कभी धन नहीं लूट सकते क्योंकि परमात्मा तो प्रेम है और प्रेम को बाजार में बेचा नहीं जा सकता। दूसरों की कीमत पर कौन से अवतरण ने धन एकत्र किया? हमें उनके जीवन, उनके आदर्श को देखना चाहिए और तभी गुरुओं के पास जाना चाहिए। मराठी की एक कहावत है, 'गुरुचेति काले आहे।' आज के कलियुग की यह दुर्व्यवस्था निःसन्देह हमारी बाएं या दाएं ओर जाकर असन्तुलित हो जाने के कारण है। क्योंकि हमारा उत्थान नहीं हुआ है। केवल इतना ही नहीं; यह कपटी गुरु सभी प्रकार की गलत चीज़ें पढ़ा रहे हैं और आप लोग उनके पीछे दौड़ रहे हैं। आपका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है, कोई आधार नहीं है। यही कारण है कि आप इन मूर्खों के पीछे दौड़ रहे हैं जो आपको बेवकूफ़ बना रहे हैं।

राजनीति में भी ऐसा ही हो रहा है और हम या तो बाएं को चले जाते हैं या दाएं को। बाईं ओर के आन्दोलन में नियंत्रण समाप्त हो जाता है। नियंत्रण समाप्त कर दो, अनुशासन समाप्त कर दो, लोगों को अपने स्वतन्त्र विचार बनाने दो, उन्हें स्वतन्त्र व्यक्ति बनने दो। बाईं ओर के आन्दोलन में व्यक्ति महत्वपूर्ण हो जाता है। सामूहिकता का महत्व नहीं रह जाता, व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है। ये कहते हैं कि व्यक्ति की उन्नति होनी आवश्यक है और तब वह व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से स्पर्धा करने लगता है तब दो व्यक्ति परस्पर झगड़ते हैं, संस्थाएं परस्पर झगड़ती हैं, मुकाबला होता है और व्यक्ति के महत्व को उन्नत करने में लगे इन लोगों का भयानक दुर्व्यवहार देखने को मिलता है। यह आपका प्रजातन्त्र है जो बड़े–बड़े असुरों की सृष्टि करने में लगा हुआ है। जिनका आने वाले कल हमें सामना करना होगा। जब वे इस देश में अपने दोगले (hybrid) उत्पादों को बेचने के लिए आएंगे और हम सब बिक जाएंगे।

इसी चीज़ का एक और पहलू भी है इसमें भी पूर्ण मूर्खता है अधिकारियों का नियंत्रण है जैसा हमें साम्यवाद में मिलता है। वहाँ व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है समाज महत्वपूर्ण है। सामूहिकता के हित के लिए व्यक्ति की बलि चढ़ा दी जाती है, उसे समाप्त कर दिया जाता है, उसे जेल में डाल दिया जाता है। सामूहिकता को जीवित रखने के लिए सभी कुछ उचित माना जाता है। ये सभी मानव के मानसिक प्रक्षेपण एवं विचार धाराएं हैं जिनका जीवन से बिल्कुल कोई सम्बन्ध नहीं है? व्यक्ति को यदि आप भूखों मारने लगें या ऐसी घुटन में रहने पर विवश करे दें तो अवसर प्राप्त होते ही वह ऐसे स्थान पर दौड़ेगा जहाँ उसे स्वतन्त्रता मिल सके और इसके लिए उपयुक्त अवसर

पाते ही वह दुर्व्यवहार करने लगेगा। अरब देशों से आने वाले लोगों को मैंने देखा है वे अपने देश में शराब नहीं पीते परन्तु एक बार जब वे इंग्लैण्ड आ जाते हैं तो आप सोच नहीं सकते कि वे कहाँ–कहाँ जाते हैं। उनके अन्दर बिल्कुल अन्तःपरिवर्तन नहीं है। परन्तु वे अपने ही स्वर्ग में रहे चले जाते हैं और सोचते हैं कि हमने सामूहिकता का हित पा लिया है। व्यक्ति के बिना सामूहिकता नहीं प्राप्त की जा सकती, और सामूहिकता के बिना व्यक्ति कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता, यह महत्वपूर्ण बात है।

तो बाएं और दाएं, दोनों आन्दोलनों को उचित रूप से नियंत्रित तभी किया जा सकता है जब हम ये समझ लें कि हमें मध्य में रहना है। परन्तु मध्य में किसलिए रहना है? अपने उत्थान के लिए, अर्न्तपरिवर्तन के लिए इस कठोरता और मानसिक प्रक्षेपणों से हमें मुक्त होना है क्योंकि मानसिक प्रक्षेपण रेखीय (linear) है। ये एक ही रेखा में चलते हैं और विज्ञान की तरह से पलटकर आपको कष्ट देते हैं। विज्ञान ने एटम बम बना दिया और अब आपकी समझ में नहीं आता कि इसका क्या करें। कल आप सभी प्रकार के कम्पयूटर बना लेंगे तो आप कम्पयूटर के दास बन जाएंगे और कम्पयूटर आपको नियंत्रित करेंगे। आपकी समझ में नहीं आएगा कि क्या करें। आपने इतनी सारी मशीनें बना लीं, उनसे भी समस्याएं खड़ी हो रही हैं। इसके समाधान के लिए आपको उत्थान की आवश्यकता है जिसके लिए आपको मध्य में रहना होगा। एक बार जब आप मध्य में आ जाएंगे तो व्यक्ति और सामूहिता के बीच, मशीनों और समाज के बीच, चरित्र और धर्म के बीच सन्तुलन विकसित हो जाएगा। इस सन्तुलन को लाया जाना आवश्यक है। यह सन्तुलन आपके अन्तर्निहित है, ये बाहर की चीज़ नहीं है, यह भाषण नहीं है, यह सिर्फ इतना कहना ही नहीं है, ओह मैं बहुत संन्तुलित हूँ। बहुत से लोग स्वयं को प्रमाणित करते हैं कि "मैं बहुत सन्तुलित हूँ, मैं पूर्णतया ठीक हूँ, मुझे इस पर विश्वास नहीं है।" आप विश्वास करने वाले या न करने वाले कौन होते हैं? क्या आपने वास्तविकता देखी है? वास्तविकता क्या है? सर्वप्रथम यह वास्तविकता आपको महसूस करनी होगी। परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति ही वास्तविकता है। सर्वप्रथम इस वास्तविकता को महसूस करें। इसे महसूस करने के पश्चात् आप वास्तविकता की उस अवस्था तक पहुँच जाएंगें जहाँ आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस करेंगे आपमें क्या दोष है, दूसरों में क्या दोष है, समाज में क्या दोष हैं, सामूहिकता में क्या दोष है और व्यक्ति विशेष में क्या दोष है। अपने दोषों को देखने के लिए जब तक आपमें पूर्ण ज्ञान न होगा कैसे आप दोषों को सुधार सकेंगे? एक व्यक्ति ने कोई कार्य किया है तो मुझे भी वैसा ही करना है, दूसरे व्यक्ति ने कुछ किया है तो मुझे उसे पछाड़ना है। समस्याओं का समाधान करने का यह तरीका नहीं हैं। परन्तु आप हिंसा पर हिंसा डाले चले जाते हैं, असत्य पर असत्य; अवास्तविकता पर अवास्तविकता डाले चले जाते हैं। इसके लिए आपको आत्मसाक्षात्कार लेना होगा। यह बहुत आवश्यक है। जिन लोगों ने आत्मसाक्षात्कार

प्राप्त कर लिया है मैं सोचती हूँ कि वे मुखर (स्पष्ट) रूप से कहेंगे कि उन्हें लाभ हुआ है।

स्वतंत्रता संघर्ष के समय लोगों ने कितना बलिदान किया। निःसन्देह अब वो लोग नहीं रहे, शासन कार्य में अन्य लोग दिखाई पड़ते हैं, परन्तु उस समय लागों ने बहुत बलिदान किया। सहजयोग में आपको कुछ बलिदान करने की आवश्यकता नहीं, कुछ त्यागने की आवश्यकता नहीं, आपको अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त हो जाता है, लक्ष्मी तत्व सुधर जाने से आपकी बैंक राशी (bank balance) काफी बढ़ जाता है। जीवन आपको पूर्ण संतोष प्रदान करता है। शान्त होकर आप हर चीज़ के साक्षी बन जाते हैं। आपका सौन्दर्य बोध बढ़ जाता है और आप पूर्ण संघटित व्यक्ति (integerated personality) हो जाते हैं। आपमें ऐसी गतिशीलता आ जाती है कि आपको किसी का भय नहीं रहता। परन्तु यदि केवल इतना ही कुछ था तो आप कह सकते हैं, "श्री माताजी व्यक्ति (individual) किस प्रकार कार्य कर सकता है? आपको सामूहिक चेतना प्राप्त हो जाती है जिसके द्वारा आप सामूहिकता को महसूस कर सकते हैं। केवल इतना ही नहीं, सामूहिकता को ठीक करने की शक्ति भी आपको प्राप्त हो जाती है, जैसे कि सहजयोगियों को प्राप्त है। वे शान्ति की सृष्टि कर सकते हैं। सभी प्रकार की मंगलमयता वे ला सकते हैं । ऐसा हुआ है, विश्व भर में ऐसा हो रहा है। परन्तु परेशानी ये है कि लोगों के पास वास्तविकता को देखने के लिए समय नहीं है। उन्हें जो भी कुछ प्राप्त हो गया है वे उसी से सन्तुष्ट हैं।

सहजयोग में हम कभी नहीं कहते कि, 'ऐसा करो, ऐसा मत करो। मैं कभी नहीं कहती कि आप यह कार्य मत करो, क्योंकि यदि मैं ऐसा कहूँ तो आधे लोग दौड़ जाएंगे। परन्तु जब आप अपने हृदय में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे और जब आप देखेंगे कि आपने हाथ में साँप पकड़ा हुआ है तो स्वयं ही उसे फेंक देंगे। मुझे बताना नहीं पड़ेगा। मेरे कहने का अभिप्राय ये है कि आपको स्वयं का स्वामी बनना पड़ेगा, अपना गुरु बनना पड़ेगा। आप की अपनी ही शक्ति जागृत करनी होगी। ये आपकी अपनी संपत्ति है जिसे आपको प्राप्त करना होगा। मुझे इसमें कुछ नहीं करना, मैं तो मात्र उत्प्रेरक (catalyst) हूँ।

मैं आप सब लोगों की धन्यवादी हूँ। भिन्न केन्द्रों से चलकर मेरे जन्मदिवस पर मुझे मुबारकबाद देने के लिए आप आए और आकर ये कहा कि यहाँ आकर आपको बहुत प्रसन्नता हुई। आप सबको देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आप सभी लोग अपने क्षेत्रों में अथक कार्य कर रहे हैं। पूरे विश्व में हमारे बहुत से केन्द्र हैं, बम्बई में भी बहुत से केन्द्र हैं। जो लोग दिन और रात कार्य कर रहे हैं वे मुझे याद हैं। आस्ट्रेलिया में सिडनी के अन्दर बारह केन्द्र हैं, बारह आश्रमों में वे लोग कार्य कर रहे हैं। सामूहिक रूप से आश्रमों में वे रहते हैं। कुछ लोग व्यक्तिगत रूप से भी कार्य कर रहे हैं। हम नहीं कहते कि ऐसे वस्त्र पहनो या किसी अन्य प्रकार की मूर्खता करो। ऐसा कुछ नहीं

है। संवेदनशील, विवेकवान, गरिमामय लोग अत्यन्त सुहृदय, प्रेममय एवं करुणाशील बन गये हैं। केवल इतना ही नहीं **नाड़ीग्रन्थः में वर्णित वे ही लोग कल की नस्ल होंगे। उन्हीं को चुना गया है और वही लोग विश्व के भाग्य का निर्णय करेंगे। यह सब नाड़ी ग्रन्थ में लिखा हुआ है ।** परन्तु व्यक्ति को समझना होगा कि जब तक मानव विशाल रूप से सहजयोग को स्वीकार नहीं कर लेता यह सब कार्यान्वित न होगा। सहजयोग किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है। यह सामूहिक आन्दोलन है। गाँवों में मैंने देखा है, आठ हज़ार, दस हज़ार लोगों को सामूहिक रूप से आत्मसाक्षात्कार हो जाता है क्योंकि वे सहज लोग हैं। केवल इतना ही नहीं वे वास्तविकता में अत्यन्त धार्मिक हैं। अब यहाँ नगर में भी हमारे बहुत से केन्द्र हैं। ये कार्यक्रम करने का निर्णय अचानक लिया गया, जिसके कारण हम सभी लोगों को सूचित न कर पाए। लोग ये न जान सके कि यह कार्यक्रम यहाँ है। बहुत से लोग शहर से बाहर गए हुए हैं परन्तु कोई बात नहीं। इतने थोड़े समय में जो कुछ भी किया गया बहुत ही अच्छी तरह से किया गया। आयोजन करने वाले लोगों को मैं बधाई देती हूँ। उन्होंने इतने थोड़े समय में यह सारा कार्य किया है। यह सब स्वतः (spontaneous) हैं। इतने थोड़े समय में यह सब कार्य कर पाना असम्भव है। सारे कार्यक्रम का निर्णय अचानक लिया गया।

तो यह सजहयोग की उपलब्धि है कि आप लोग स्वतः सभी कुछ इतनी सुन्दरता पूर्वक आयोजित करते हैं। आप सब लोगों का हार्दिक धन्यवाद कि आप मेरे जन्मदिवस पर मुबारकबाद देने के लिए यहाँ आए । अपने जीवन काल में ही मैं इस पूरे विश्व को एक सुन्दर विश्व में परिवर्तित हुआ देखना चाहूँगी।

परमात्मा आप सबको धन्य करें।